२. द्वितीय अध्याय : उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव जाति के राग |

२.० प्रस्तावना

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव जाति के रागों का शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है :

२.१ बिलावल थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.१.१ राग : भिन्न षड्ज

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्ज्य

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब शुद्ध स्वर

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्री

आरोह : सा ग, म ध, नि सां

अवरोह : सां, नि ध, म ग, सा

पकड़ : सा, ऩि ध़ ऩि, साम, गमधनि ध, म ग, सा

विशेषता : इस राग में रागेश्री की छाया दिखाई देती है। लेकिन रागेश्री खमाज थाट का राग है; तथा रागेश्री के अवरोह में कोमल निषाद तथा ऋषभ लिया जाता है।[१] इस राग को कौशिकध्वनि तथा हिंदोली नाम से भी जानते है | इस राग में 'धम' तथा 'धग' की स्वर संगती सुंदर प्रतीत होती है |[२]

स्वर विस्तार: सा, सा ऩि सा, ऩि ध़, म़ ध़ ऩि ध़ म़, म़ ध़ ऩि सा। सा, ग सा, सा ऩि ध़ ऩि, म़ध़ऩि, म़ ध़ ऩि सा, ऩिसा ग सा, ऩिग - सा, ऩिध़, म़ध़ऩिसा। गगसाऩिध़ऩिसागमग-, ऩिसग, ध़ऩिसाग, साग मग, साम ग,म ग सा। सा ग म, ऩिसागम, ध़ऩिसागम, गम, मग, साग-म, साम, गम, गमधग, मग, ध म ग - सा। गगसाऩिध़ऩिसागमध-, ग म ध, गमध-

नि-ध-,मनी-ध,गमधनि, निधमग, मधनीध म ग, म ग - सा। गमधनि, मधनी, निधमग, मधनिसां, निसां, मधनिसां, गमधनि सां, धनिसां गं सां, धनी सांगं मं गं सां, निध, मधनि सां नि ध, निध मग, साग मग, म-गसा, ऩिसा, ध़ऩिसाग म ग - सा।[३]

राग : भिन्न षड्ज - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : श्याम तिहारी मदन मुरलिया तन कसके मन मोह्यो।

अंतरा : यह सजीव जगत जल थल सब, नाद ताल सुर सकल देव गन मोह्यो।।

स्थायी

			सा
			श्या
ग म - ध	ग - - म	- - साग मग	ग - सा ऩि
ऽ म ऽ ति	हा ऽ ऽ री	ऽ ऽ मऽ ऽऽ	द ऽ न मु
३	×	२	०
ध़ ऩि सा म	ग गम ध ग	मध निसां नि सां	निध निग म सा
ऽ र ऽ लि	या तन क स	केऽ ऽऽ म न	मोऽ ऽऽ ह्योश्या
३	×	२	०

अंतरा

ग म ध धनि	सां सां नि नि	सां - नि सां	नि ध म ग
य ह स जीऽ	ऽ व ज ग	त ऽ ज ल	थ ल स ब
०	३	×	२
नि ध नि सां	गं गं सां सां	नि सां निध धनि	सां सां नि सां
ना ऽ द ता	ऽ ल सु र	स क लऽ देऽ	ऽ व ग न
०	३	×	२
निध निग म सा	[४]		
मोऽ ऽऽ ह्यो श्या			
०			

राग : भिन्न षड्ज - एकताल (विलंबित)

स्थायी : झनन-झनन-झनन बाजे सखी मोरी नाचे गावे।

अंतरा : सुनत बुध करी आनंद, अमर गुण ध्यान धरत, अब अंगवा मनवा संग मंद मंद सुगंध साजे।

स्थायी

सां नि	सां (नि)ध	ध म	ग ग	म ग	- सा
झ न	न झ	न न	झ न	न बा	ऽ जे
×	०	२	०	३	४

ध़ ऩि	सा म	ग -	म ध	निनिधम मधनिसां	निसां धनि
स खी	मो ऽ	री ऽ	ना चे	गाऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽ वेऽ
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म ग	म नि	नि ध	सां सां	ध सां	- सां
सु न	त बु	ऽ ध	क री	आ नं	ऽ द
×	०	२	०	३	४

ध नि	सां मंगंमं	गं सां	सां -	नि सां	(नि)ध ध
अ म	र ऽऽऽऽ	गु ण	ध्या ऽ	न ध	र त
×	०	२	०	३	४

म ग	म ध	निनिधम मधनिसां	--निध निधग-	मधनिसां -	नि सां
अ ब	अं ग	वाऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽमऽ ऽऽनऽ	वाऽऽऽ ऽ	सं ग
×	०	२	०	३	४

सां नि	सां (नि)ध	- म	ग ग	म ग	- सा
मं ऽ	द मं	ऽ द	सु गं	ध सा	ऽ जे
×	०	२	०	३	४

रचनाकार : उस्ताद अमान अली खाँ साहब (भेंडी बझार घराना)

२.१.२ राग : रसरंजनी / सुरनन्दिनी

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्रि

आरोह : सा रे म ध नि सां

अवरोह : सां नि, ध-म, ध-म रे- सा

पकड़ : सा ऩि ध़ ऩि सा म, म ध नि ध म रे सा

विशेषता : यह बिलावल ठाठ का एक अप्रचलित मधुर राग है | इस राग में 'रेम' संगती होने के कारण राग दुर्गा का आभास होता है; परन्तु इस राग में पंचम का वर्ज्य होना तथा निषाद का प्रबल होना इन सब बातों के कारण राग दुर्गा से यह अलग दिखाई देता है | इस राग में तार षड्ज मुख्य न्यास स्वर है |[६] इस राग के समीप के रागों में 'भवानी' नामक चतुस्वरी जाति की रागिनी है जिसके अंतर्गत सा रे, म, ध' स्वरों का प्रयोग होता है; तथा गंधार, पंचम एवं निषाद वर्ज्य है | और एक 'जय भवानी' नामक राग है जो रसरंजनी के समीप का राग है; जिसे बी. सुब्बा राव जी ने निर्मित किया है, जिसमें जयजयवंती की 'ध़ ऩि रे, स्वर संगती का प्रयोग राग भवानी के अवरोह के अंत में कर के बनाया गया है; जिसका

आरोह अवरोह स्वरुप इस प्रकार है- ‘सा रे म ध सां - सां ध म – रे सा -, ध़ ऩि रे - म-’ |[७]

रसरंजनी राग, भिन्नषडज से करीब का राग है । फर्क इतना है की भिन्नषडज में रिषभ स्वर वर्ज्य है; तथा रिषभ के स्थान पर गंधार लिया जाता है । ऐसा भी कह सकते हैं की राग दुर्गा में पंचम वर्ज्य करके निषाद स्थापित करने से इस राग के स्वर सामने आते हैं | कुछ गुणीजन इसका वादी संवादी ‘सा-म’ मानते हैं |[८]

स्वर विस्तार: सा ऩि ध़ ऩि सा, ध़ ऩि सा रे सा ऩि ध, म़ ध़ ऩि सा। ध़ऩि साम, ऩिसाम, म रेम, रेमधम धध म, ध म रे सा । ऩिसा मम रेस ऩिसा रेम ध, म ध नि ध, म ध नि सां नि ध, नि ध म, ध म रे सा। म ध नि ध, म ध नि सां, ध नि सां रें, सांरें सांसां नि, धनिसांमं- रें सां, ध नि सां रें सां रें सांसां नि ध, म ध नि ध म, ध म रे, म रे सा।[९]

राग : रसरंजनी - मध्यलय (त्रिताल)

स्थायी : कैसे कटे रैन पिया बिन बालमा डर लागे मोहे मैं कित जाऊँ |
अंतरा : एक तो पिया न पास दूजे कोऊ हमरो संग न साथी, अपनी बिथा मैं काको सुनाऊँ |

स्थायी

नि
कै

ध म म रे	म - - म	रे - सा सा	रे रे सा सा
से क टे ऽ	रै ऽ ऽ न	पि या बि न	बा ल मा ड
३	×	२	०
सा रे म म	[ध]नि - ध -	म रे रे म	रे - सा नि
र ला ऽ गे	मो ऽ हे ऽ	मैं ऽ कि त	जा ऽ ऊँ कै
३	×	२	०

अंतरा

म
ए

म [नि]ध - नि	सां - - -	सां - रें -	सां - - सां
क तो ऽ पि	या ऽ ऽ ऽ	न ऽ पा ऽ	स ऽ ऽ दू
३	×	२	०
सां [मं]रें मं रें	सांनि रेंसां नि -	ध - म म	रे - सा सा
जे को ऽ ऊ	हऽ मऽ रो ऽ	सं ऽ ग न	सा ऽ थी अ
३	×	२	०
सा रे म म	[ध]नि - ध -	म रे रे म	रे - सा नि [१०]
प नी ऽ बि	था ऽ मैं ऽ	का ऽ को सु	ना ऽ ऊँ कै
३	×	२	०

२.१.३ राग : सालंग सारंग(सालंग)

थाट : बिलावल तथा काफी

वर्ज्य स्वर : 'ग ध' स्वर

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा, रे, म प, नि, सां

अवरोह : सां, नि प, म, रे, ऩि सा

पकड़ : म रे ऩि सा, ऩि, प़ ऩि सा रे, म प नि प, म रे, ऩि, सा

विशेषता : सारंग का यह एक अप्रचलित प्रकार है | इस राग में सारे स्वर शुद्ध होने से इसे बिलावल ठाठ में रखा गया है | सारंग का प्रकार होने के कारण कुछ गुणीजन इसे काफी ठाठ जन्य भी मानते हैं | इस राग में मध्यम स्वर मुक्त है | इस राग में भी सारंग के अन्य प्रकारों के भांति मंद्र निषाद पर बार-बार न्यास किया जाता है; जैसे - 'म, रे ऩि सा ऩि' अथवा 'म, रे सा, रे सा ऩि' | वृंदावनी सारंग तथा मध्यमादि सारंग भी औडव जाति के राग है; फर्क सिर्फ इतना है, वृंदावनी में दो निषाद मतलब की आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा मध्यमादि में सिर्फ कोमल निषाद का प्रयोग होता है | जब इस राग में सिर्फ शुद्ध निषाद है | इस राग की रचनाओं में विलंबित एकताल में

'बहुत दिनवा बीतत बीत गये' तथा एकताल मध्यलय में 'जारे जारे जारे जाय कहो' है |[११]

इस राग में वादी संवादी 'सा म' भी मानते हैं | इस राग के निकटवर्ती रागों में शुद्ध सारंग भी है; जिसके अंतर्गत दोनों मध्यम तथा अवरोह में धैवत का प्रयोग होता है | जब, सालंग सारंग में धैवत तथा तीव्र मध्यम वर्ज्य है |[१२]

स्वर विस्तार : सा, ऩिसा, रे, मरे, प, मरे, सरे, ऩि, सा, ऩि, प, ऩि सारे, मरे, प, मप, निप, मरे, रे, म प, नि, सां, रें सां, नि, नि प, म, रे, पमरे, सारे, ऩि, सा |[१३]

राग : सालंग सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

(म)रे
अ

म प नि सां	नि - (नि)प प	मरे रे रेम प	मरे - सा (म)रे
ब तो मो री	मा ऽ न मु	रऽ ख मऽ न	वाऽ ऽ ऽ का
म प नि सां	नि - (नि)प प	मरे रे (प)म प	मरे - सा (म)रे
ऽ हे ऽ ध	रे ऽ ऽ नि	रऽ र्थ अ भि	माऽ ऽ न का
३	×	२	०

अंतरा

(म)रे
चा

म पनि नि सां	सां - सां नि	सां सांरें मं रें	सां - सां नि
ऽ रऽ ऽ दि	न ऽ की रू	ऽ पऽ ऽ जो	ब ऽ न औ
- नि (सा)नि (रें)सां	नि - प प	म रे (प)म प	मरे - सा रे
ऽ र ध न	मा ऽ न तु	ऽ म प र	प्याऽ ऽ रे रा
म प - नि	सां - - रें	सां नि - प	मरे - सा (म)रे १४
ऽ त ऽ क	रे ऽ ऽ ह	र गु ऽ ण	गाऽ ऽ न अ
३	×	२	०

२.१.४ राग : मलुहा सारंग

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : आरोह में 'ग ध' तथा अवरोह में 'नि ग' स्वर

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा रे म प नि सां

अवरोह : सां धपम, रे, प म, रे, ऩि सा, ध़प़, म़, प़ ऩि सा

पकड़ : सा ध़प़, म़, प़ ऩि सा, रे म रे, प म रे, ऩि सा

विशेषता : मलुहा तथा सारंग दोनों के मेल से बना हुआ सारंग का यह एक अल्प प्रचलित प्रकार है | इस राग में 'सा, ध़प़, म़, प़ ऩि सा' यह मलुहा अंग आता है | इस राग में आरोह में सारंग है तथा अवरोह के उत्तर भाग में मलुहा का अंग 'सां धपम' अथवा नि, सां, ध, पम' एवं पूर्वांग में 'पमरेसा', 'ऩिसारे सारे' यह स्वर समूह लिया जाता है | निषाद पर न्यास कर के मींड से 'सा' पर आने से यह राग अधिक स्पस्ट होता है | इस राग का चलन मंद्र-मध्य सप्तक में अधिक है | विलंबित ख्याल के लिए उपयुक्त है | इस राग की रचना में: कैसे सजन घर जाऊँ-तीनताल (मध्यलय) है |

इस राग का और एक प्रकार है; जिसमें दोनों निषाद प्रयुक्त होते है | जीसके अंतर्गत अवरोह में मलुहा अंग के साथ बीच-बीच में 'सानि̱पमरे' इस तरह से कोमल निषाद युक्त सारंग अंग दिखाते हुए काफी तथा बिलावल का मिलाजुला औडव-षाडव जाति का प्रकार मानते हैं |

इस राग का निकटवर्ती राग यशोवती सारंग है | जिसमें पटदीप अंग तथा उत्तरांग वादी होने से यह दोनों राग एक दुसरे से भिन्न दिखाई देते है | इस राग का मुख्य स्वर समुदाय 'सा, ध़प़म़, प़नी़, सा, सा, रे म रे, पमरे, सा रे, ऩि, सा, रे, मपनी़, सां, धप, म, पनीसां, धपधम, पम, रे, ऩि, सा' राग में बार-बार आता रहता है |[१५]

चलन :- सा, ऩि सा, ऩि ऩि सा, ऩि सा, रे, सारे, ऩि, सा, रे, मरे, पमरे, ऩि, सा, - ध़प़, म़ - म़ प़ - ऩि- ऩि सा, ऩि ऩि सा, सा रे म - म ऩि रे सा - ध़प़, म़ |[१६]

दो निषाद वाला प्रकार

सा, ऩि सा, ध़ प़ म़ -, प़ ऩि, सा-, रे, मरे, पमरे-, ऩि, सा- | सा-, ऩि̱ -, प़, म़प़, ऩि, सा-, सा, ध़प़ ध़म़, प़ ऩि, सा-, रे, मरे, पमरे-, ऩि, सा-, सा, रे, मप, नि̱प, प, नि, सां--, सां, धप, म, प नि - सां -, रें सां, नि̱ -, प-, धप, धम, पमरे-, सारे, ऩि -, सा |[१७]

राग - मलुहा सारंग - सरगम गीत (त्रिताल)

स्थायी

रे म प म	रे सा ध़ प़	म़ - प़ ऩि	- ऩि सा -
रे म प नि	सां रें नि सां	ध प ध म	प म रे म
०	३	×	२

अंतरा

म म म प	प प नि सां	सां सां सां सां	रें नि सां - १८
रें मं रें सां	नि सां ध प	म प म रे	ऩि - सा -
०	३	×	२

मलुहा सारंग - त्रिताल (दो निषाद वाला प्रकार) दुसरा प्रकार

स्थायी

ऩि रे सा सा	- धऩप म़ म़	प़ - ऩि -	सा - सा -
पि ह र वा	ऽ कोऽ स म	झा ऽ ऊ ऽ	कै ऽ से ऽ
०	३	×	२
ऩि सा रे म	म - प प	नि॒ नि॒ प म	रे - सा -
ए क हु न	मा ऽ न त	मो ऽ री बा	ऽ ऽ त ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म म म म	प प नि नि	सां सां सां रें	सां नि सां -
नि स दि न	क र त र	ह त च तु	रा ऽ ई ऽ
०	३	×	२
रें - सां सां	धप म - प	सां - प नि॒	प म रे सा
का ऽ स म	झाऽ वे ऽ जो	स ऽ म झे	ऽ ना ऽ ही [१९]
०	३	×	२

२.१.५ राग : यशोवती सारंग

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : आरोह में 'ग ध' तथा अवरोह में 'नि ग' स्वर

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा, रे, म प, नि सां

अवरोह : सां ध प, धम, प म, रे, ऩि, सा

पकड़ : म प, नि, सां ध, प, धम, प म रे, ऩि सा

विशेषता : यह राग सारंग तथा पटदीप के मिश्रण से बना हुवा सारंग का अल्प प्रचलित एक प्रकार है | इस राग के पूर्वांग में सारंग की स्वरावली जैसे - 'ऩि सा रे म रे, रे म प म रे, ऩि, सा' इत्यादि तथा उत्तरभाग में 'म प नि, सां ध, प, धम, प' से पटदीप का अंग स्पस्ट होता है |

इस राग का समप्रकृतिक राग मलुहा सारंग है | इन दोनों रागों में भेद इतना है की मलुहा सारंग में मलुहा अंग है तथा चलन मंद्र मध्य में है; तथा मध्यम पर बार-बार न्यास द्वारा मलुहा अंग दिखाते हैं, जैसे की 'रे, सा ऩि, सा-, ध़ प़ म़, प़ ऩि, सा' | जब की यशोवती सारंग में पटदीप का अंग 'मप नि, सां ध, प, धम, प' लिया जाता है, तथा राग का चलन मध्य-

तार सप्तक में एवं पंचम पर ठहराव; इत्यादि बातों से यह दोनों राग एक दुसरे से भिन्न दिखाई देते हैं | इस राग की राग वाचक स्वर संगती 'नि सां ध, प, धम, प-, रेमपम, रे ऩि सा' है | इस राग की पारंपरिक रचना में त्रिताल में बद्ध 'मालनिया गुंद लावोरी हरवा' है | इस राग में भी सारंग के अन्य प्रकारों की भाँती मन्द्र निषाद पर बार-बार न्यास किया जाता हैं |

स्वर विस्तार- ऩि, सा, रे, मरे, पमरे, सारे, ऩि, सा, ध़, प़, म़प़, ऩि, सा, रे, मप, म, रे, ऩि, सा रे, मप, नि, सां, रेंसां, नि, सांध, प, धम, प, म, रे, सारे, ऩि, सा |[20]

यशोवती सारंग - सरगम गीत (त्रिताल)

स्थायी

नि नि सां सां	ध प ध म	प - रे म	रे सा ऩि सा
रे म - रे	म प प नि	सां रें नि सां	ध प ध म
०	३	×	२

अंतरा

म - म प	प प नि नि	सां - सां सां	रें नि - सां
रें मं रें सां	रें नि सां सां	ध म प रे	म रे ऩि सा [21]
०	३	×	२

२.१.६ राग : चंद्रिका

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : आरोह में ‘ध ग’ तथा अवरोह में ‘नि ग’ स्वर

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब शुद्ध स्वर

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्रि

आरोह : ऩि सा रे म प नि सां

अवरोह : सां ध प, मपध, प, म-रे ऩि सा

पकड़ : म प नि सां, नि सां ध प, मपध, प, म रे, ऩि सा

विशेषता : कई गुणीजन इस राग के आरोह में धैवत तथा अवरोह में निषाद दुर्बल मानकर षाडव जाति का राग मानते हैं । नि सा रे म प नि सां से सारंग, ‘सां ध प म रे, रे म प ध प म रे’ से दुर्गा तथा ‘म रे गऩि सा’ से श्याम कल्याण तथा पनीसां, निसां, धप’ स्वरावली से पटदीप का आभास होता है | इस राग की रचनाएँ - सखी चतुर नंदलाल-झपताल में (रचयिता-ज.दे. पत्की), बदरिया सावन की-एकताल में (रचयिता-ज.दे. पत्की) है |[२२] कर्णाटक संगीत पद्धति में केवल चन्द्रिका नामक कोई राग नहीं है; परन्तु पूर्णचन्द्रिका, रविचंद्रिका, उदयरविचन्द्रिका, गौलचन्द्रिका इत्यदि नामक राग देखने को मिलते हैं |[२३] सरोद वादक उ. अली अकबरखान चन्द्रिका नामक जो राग बजाते हैं; वह इस चन्द्रिका राग से भिन्न है |

स्वर विस्तार : सा सारेससा ध़ प़, प़ ऩि सा, ऩि सा रे, सा ऩिसा ध़ प़, प़ ऩि सा, म रे, ऩि सा । ऩिसारेमप, मपधप, म ध प, मप ध प म रे, म रे, ऩि सा ।

ऩिसा मम रेस ऩिसा रेम पनि, म प नि, नि, नि सां, नि सां मं रें, मंमं रें निसां, नि सां रेंरेंसां निसां ध प, मपधध प, मप धप मरे, म रे, ऩि सा।[२४]

चंद्रिका – त्रिताल (सरगम गीत)

स्थायी

नि सां ध प	म प ध म	प - प -	मध पम रेसा ऩिसा
सा ऩि सा रे	सा ध़ म़ प़	ऩि - सा रे	सा ऩि सा सा
रे म रे म	प ध म प	नि सां रें सां	ध प म प
०	३	×	२

अंतरा

म प सां -	सां सां नि सां	रें मं रें सां	रें नि सां सां
नि सा रें सां	- ध म प	नि सां ध प	ध म प प
रे म रे म	प ध म प	नि सां रें सां	ध प म प[२५]
०	३	×	२

२.१.७ राग : जलधर केदार

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब शुद्ध स्वर

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्री का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे म, प, घ प सां

अवरोह : सां ध प, म मरे मरे प, म रेसा रे सा

पकड़ : सा रे सा म, म मरे मरे प, पध म

विशेषता : कुछ गुणीजन शुद्ध निषाद तथा तीव्र मध्यम का अल्प प्रयोग करके कल्याण थाट का षाडव प्रकार मानते हैं। परन्तु प्रचार में अधिकतर औडव जाति का ही जलधर केदार प्रचलित है | इस राग में केदार तथा शुद्धमल्हार का मिश्रण है। इस राग में गंधार, निषाद तथा तीव्र मध्यम वर्ज्य होने से शुद्धमल्हार तथा दुर्गा राग के अधिक निकट का राग है। प्रचार में औडव जाति का प्रकार ज्यादा प्रचलित है। राग केदार से 'सा रे सा, म प, म प ध प म, सा रे सा म' तथा शुद्धमल्हार से 'म मरे मरे प' की संगती को लेकर इस राग की रचना होती है। जलधरकेदार में केदार का अंग 'सा रे सा म, सा रे सा' अधिक है। उसी प्रकार उत्तरांग में 'धमप सां' अथवा 'पप सां' 'धध प, मम प सां' इत्यादि स्वर-समूह से भी जलधरकेदार का

अपना एक अलग अस्तित्व बनता है। बिलावल थाट युक्त दुर्गा के स्वर भी एक समान है; परन्तु चलन भेद, स्वरों का लगाव इत्यादि बातों से यह दुर्गा से भी अलग दिखाई देता है। 'मरे प' की संगती दोनों रागों में है परन्तु दुर्गा राग में जो स्वर संगती है, वह न तो मिन्ड युक्त है तथा नही उसमें मध्यम के कण का प्रयोग है। जबकि 'म रे मरे प' इस प्रकार से मल्हार वाचक स्वर-संगती जलधर में है; उसी प्रकार दुर्गा में 'रे ध़ सा' यह स्वर-संगती तथा जलधरकेदार में 'सारे साम तथा 'पम सा रे सा' इत्यादि मुख्य स्वर-समूह है। जलधर केदार में अंतरे के उठान में पंचम षड्ज की संगती भी महत्त्व पूर्ण है, जो दुर्गा राग से इस राग को अलग करती है।[२६]

यह केदार अंग का राग है; इस राग में सभी स्वर दुर्गा के होते हुए भी कुशलता से केदार सामने लाया जाता है। केदार का अंग 'सारेसा म, ध प म, सां ध प म, म रे ध़ सा म, सा म रे प, ध प म । तथा 'म रे प, म रे ध़ सा' यह दुर्गा के स्वर समूह लेकर मध्यम पर न्यास करने से दुर्गा दूर होता है।[२७]

राजा नवाब अली कृत 'मरिफुन्न गमात-प्रथम भाग' के अंतर्गत इसमें निषाद बताकर षाडव जाति का राग माना हैं | तथा वादी-संवादी 'प-रे' बताया है | इन्होंने केदार तथा जलधर केदार में भेद बताते हुए कहा है की 'केदार में रिषभ पूर्वांग में एवं निषाद, धैवत उत्तरांग में दुर्बल होते हैं | परन्तु जलधर केदार में ऐसा नहीं है; मतलब यह स्वर दुर्बल नहीं है | जिसका चलन इस प्रकार बताया है-'म-, प-, ध प म, रे सा, सा रे सा, म रे म म प,ध प म, नि ध प, म-सारे-सा। साम -रे सा, म रे प -, म प ध प म, प निध सां, नि ध प म, ध प म, रे - सा। मप सां, नि ध, नि ध प म, प सां, रें सां, मं मं रें सां, रें सां नि ध, नि ध प प, ध प म रे सा।[२८]

भातखंडे जी ने भी इससे केदार तथा मल्हार का मिश्रित रूप मानकर केदार का विस्तार करते हुए बीच-बीच में 'रे प' तथा 'म रे' की संगति का प्रयोग तथा मध्यम स्वर पर न्यास बताया है। इन्हों ने भी इस राग में गंधार तथा निषाद को वर्ज्य बताया है।

स्वर विस्तार : सारे-सा म-, म-सारे -सा, ध़ प़, सारे साम, म रे ^मरे प, म प धम, म - सारे - सा। म म (प) म--,सारे साम--, म रे रे प -, म प ध - प - म, प धम, प सां -, सांरेंसांसां ध - प -, म, सा म रे रे प, मप धध प सांरेंसांसां ध - प, धध पम पसां, पप सांसां रेंरें सांसां, सां ध प (प) म, म रे सा रे सा।[२९]

राग : जलधरकेदार – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सखी री यह सावन मनभावन। चातक मोर चकोर कोकिला,
बोलत बचन सुहावन॥

अंतरा: गरजत घन घननन-घननन कर लगे मेह बरसावन।

स्थायी

, सा रेम पध	ध म - -	मप धप म -	^{म}रे रे सा सा
, स खीऽ ऽऽ	री ऽ ऽ ऽ	यऽ हऽ सा ऽ	व न म न
३	×	२	०
रे - सा सा	सा - म म	प - प प	धसां रें सां ध
भा ऽ व न	चा ऽ त क	मो ऽ र च	कोऽ ऽ र को
३	×	२	०
प ^{ध}प म -	म - प प	ध सां ध प	मप धप मम रेसा
ऽ कि ला ऽ	बो ऽ ल त	ब च न सु	हाऽ ऽऽ वऽ नऽ
३	×	२	०

अंतरा

	म म प प	ध म प प	सां सां सां रें
	ग र ज त	घ न घ न	न न घ न
	×	२	०
ध ध म म	सां मं रें सां	ध प मप धप	म - रे सा^{३०}
न न क र	ल गे ऽ मे	ऽ ह बऽ रऽ	सा ऽ व न
३	×	२	०

राग : जलधरकेदार – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: धन घड़ी धन रात री माई। आज सुहाग की रात री माई॥
अंतरा: मोहहमद शाह बना ब्याहन आया। और रंगीला जग साथ री माई॥

स्थायी

, प़ सा रे	सा - (ध)प प	म - - रे	म सा रे सा
, ध न घ	ड़ी ऽ ध न	रा ऽ ऽ त	री मा ऽ ई
०	३	×	२

, म म म	प - पम धप	म - - रे	म - सारे सा
, आ ज सु	हा ऽ गाऽ कीऽ	रा ऽ ऽ त	री ऽ माऽ ई
०	३	×	२

अंतरा

प - सां सां	सां - रें सां	सां - ध प	मम रे म म
मो ऽ हम द	शा ऽ ब ना	ब्या ऽ ह न	आऽ ऽ ऽ या
०	३	×	२
प प सां सां	रें सां ध प	म - - रे	म सा रे सा[31]
औ ऽ र रं	गी ला ज ग	सा ऽ ऽ थ	री मा ऽ ई
०	३	×	२

राग : जलधरकेदार – लक्षणगीत - झपताल

स्थायी : आरोही-अवरोही वरजत गुणी ग-नि को। गावत जलधर राग के रुप को॥

अंतरा : मध्यम करत वादी-संवादी षड्ज धरत। आनंद न समात मनरंग रंग को।

स्थायी

ध -	मप - धप	म म	मरे - सा
आ ऽ	रो ऽ ही	अ व	रो ऽ ही
×	२	०	३
सा सा	म म प	प प	धप म -
व र	ज त गु	णी ग	नि को ऽ
×	२	०	३
म -	प - प	प प	ध म म
गा ऽ	व ऽ त	ज ल	ध ऽ र
×	२	०	३
प -	रें सां ध	धप -	धप म -
रा ऽ	ग के ऽ	रु ऽ	प को ऽ
×	२	०	३

अंतरा

प -	सां सां सां	सां सां	सां - सां
म ऽ	ध्य म क	र त	वा ऽ दी
×	२	०	३
सां^सांध	सां - सां	सांरें सां-	ध म म
सं ऽ	वा ऽ दी	षऽ ड्ज	ध र त
×	२	०	३
म -	प - प	प प	ध म म
आ ऽ	नं ऽ द	न स	मा ऽ त
×	२	०	३
प प	रें - सां	^सांध -	प ^धप म ३२
म न	रं ऽ ग	रं ऽ	ग को ऽ
×	२	०	३

संग्रहकार स्व.पं. वझे बुवा

२.२ कल्याण थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.२.१ राग : श्रीकल्याण

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : मध्यम तीव्र बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह : सा रे मं प, धप, सां

अवरोह : सां ध प, मंप रे- सा

पकड़ : सा ध़ सा, रे मं प, रे - सा

विशेषता : यह एक अप्रचलित कल्याण थाट निर्मित प्रकार है। इस राग में अवरोहात्मक 'परे' की संगती ली जाती है। इस राग में अंतरे का उठान कल्याण अंग के रागों के भाँती 'पध पप सां' अथवा 'पधमंप सां' इस ढंग से किया जाता है। इस राग का 'श्री' राग से कोई सम्बन्ध नहीं है। हाँ एक स्व. पं. कुमार गान्धर्व जी की संकल्पना है जिसे राग 'श्रीकल्याण' नाम दिया गया है। जिसमें श्री राग तथा कल्याण राग का मिश्रण है; जो इस राग से भिन्न है |[३३] कर्णाटक पद्धति से उद्भवित राग सरस्वती में निषाद स्वर वर्ज्य करने से इस राग के स्वर सामने आते हैं | सां रें ध सां, ध सां रें इत्यादि स्वरों में दुर्गा राग का भास् होता है |[३४] इस राग के जैसाही

एक ‘श्यामली’ नाम का राग है; जिसका वर्णन आचार्य एस. एन. रातंजनकर जी ने ‘अभिनव गीत मंजरी’ तृतीय भाग के अंतर्गत किया है |

स्वर विस्तार: सा ध़ ध़ सा, सा ध़ , मं ध़ सा। सा ध़ प़ -, प़ध़मं़प़ सा, सारे - सा। सा-सरेसासा ध़, ध़सारे, ध़रे सासा ध़-, रे सा ध़ प़, रे ध़ सा रे - सा। सा रे मं, मंमंरेसा रे मं, रेसा ध़प़, ध़सारेमं, प़प़ध़ध़सासा रेमं-, रेमं, रेमं मंप रे- सा। सारेमंमंरेसा सरेमंप, रेमं, रेमंप, रेमं मंप, मंप मंप मंरे - सा। सारेमंमंरेसा सरेमंपध, रेमंपध, ध़सा रेमंपध, धमंप, रेमंप, प धमंप, रेमंप मंरे -, परे- सा। सारेमंपधप सां, पधपप सां, पध सांरें सां, रें मं पं रें - सां, रें सां ध मं प रे, रे मं प रे - रे सा।[३५]

राग : श्रीकल्याण - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ओंकार की माया मधुर, चरण रज करूँ नित सुमिरन मन में
स्वर शक्ति का एक ही आधार।

अंतरा : सुरत की सुरत में मन हो सुरत,प्रणव-नव-रंग रहो अजर अमर।।

स्थायी

			मंध
			ओंऽ
मंप - रे सा	रे - सा -	रे - मं -	प प प ध
ऽऽ ऽ का र	की ऽ ऽ ऽ	मा ऽ या ऽ	म धु र च
३	×	२	०
प ध मं प	ध सां ध प	मं मं प प	रे रे सा -
र ण र ज	क रूँ नि त	सु मि र न	म न में ऽ
३	×	२	०
सा रे मं मं	प - प प	सां ध धसां रेंसां	धसां ध पध मंध
स्व र श क्ति	का ऽ ए ऽ	क ही आऽ ऽऽ	धाऽ ऽ रऽ ओंऽ
३	×	२	०

अंतरा

प प ध प	सां सां सां सां	सां ध धसां रें	सां ध प रें
सु र त की	सु र त में	म न होऽ ऽ	सु र त प्र
३	×	२	०
सां सां ध ध	प - प प	प मं पध मंप	रे रे सा मंध
ण व न व	रं ऽ ग र	हो अ जऽ रऽ	अ म र ओंऽ ३६
३	×	२	०

२.२.२ राग : वैजयंती

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : गांधार तथा धैवत

जाति : औडव-औडव

स्वर : मध्यम स्वर तीव्र तथा बाकी के स्वर शुद्ध

वादी : प

संवादी : रे

गायन समय : सायंकाल

आरोह : ऩि सा रे मं प नि सां

अवरोह : सां नि प मं रे ऩि सा

पकड़ : रे मं प नि- मं प, रे मं प मं रे, मं रे ऩि - सा

विशेषता : कल्याण वाचक 'प रे' की संगती इस राग में भी ली जाती है । शास्त्रोक्त रीति से गंधार, धैवत स्वर संपूर्ण वर्ज्य है | कुछ गुणीजन धैवत का प्रयोग मिंड-स्वरुप से करते हैं एवं अवरोह में कण स्वरूप करते है | निषाद पर न्यास मधुर लगता है |[३७] मधुसूदन पटवर्धन जी ने इस राग का गायन समय रात्री का दुसरा प्रहर बताया है; तथा वादी-संवादी 'रे प' माने हैं |[३८] बी.सुब्बा राव कृत 'राग निधि-भाग ४, में भी वादी स्वर रिषभ और संवादी स्वर पंचम माना है । कुछ गुणीजन इसे रात्रि के दुसरे प्रहर में भी गाते हैं । इस राग के समान आरोह-अवरोह वाला 'सालंग' नामक राग है जो काफी थाट से उत्पन्न माना गया है । जिसके अंतर्गत तीव्र मध्यम के स्थान पर शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता है । वैसे सालंग में

सारे स्वर शुद्ध होने से इसे बिलावल थाट का माना जा सकता है परन्तु राग सालंग यह सारंग का प्रकार होने से इसे काफी थाट के अंतर्गत माना गया है। वैसे वैजयंती राग के समीप के रागों में शुद्धसारंग और श्याम कल्याण भी है। शुद्धसारंग में दोनों मध्यम का प्रयोग होता है तथा अवरोह में धैवत का प्रयोग होता है। उसी प्रकार श्याम कल्याण में गंधार और धैवत आरोह में वर्ज्य है तथा अवरोह संपूर्ण है।[३९]

स्वर विस्तार: रेरेसा ऩिसा ऩि --, प़ ऩि –सा, ऩि सा रे ऩि -, प़ ऩि सरे सारे सासा ऩि -, प़ ऩि रे ऩि -, प़ ऩि - ऩि ऩि सा।

ऩि सा रेमं प-, रेमंपरेमं प, ऩिसा रेमं रेसा ऩिसा रे मं प, रे मं प नि मं प, रेमं पमं रे, मं रे ऩि-- सा।

ऩिसा रेमं रेसा ऩिसा रेमं पनि--, रेमं पनि, पनि सां रें सांरें सांसां नि-, प सां नि-, नि मं प, रेमंप सां नि--,पनीसां रें मं रें सां नि, नि--मंप, रेमं पनि पनि- - मं प, रे मं प मं रे, मं रे ऩि - सा।[४०]

राग वैजयंती - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : सुन-सुन बतियाँ मोरी पिया की रतियाँ, उचट जिया मोरा अति

दुःख पावे |

अंतरा : मेरे अखियन के भूखन घुमड़, कहे देंगे तुम बिन सगरी रतियाँ |

स्थायी

ऩि सा
सु न

रे म॑ प सां	नि - म॑ प	सां नि म॑ प	रे रे ऩि सा
सु न ब ति	याँ ऽ मो री	पि या की र	ति याँ उ च
३	×	२	०
रे म॑ प -	नि नि सां रें	सां नि म॑ प	[म॑]रे रे ऩि सा
ट जी या ऽ	मो रा अ ति	दुः ख पा ऽ	वे ऽ सु न

अंतरा

प[म॑] प
मे रे

प प नि नि	सां - - सां	सां सां - सां	रें - सां -
अ खि य न	के ऽ ऽ भू	ख न ऽ घु	म॑ ऽ ड़ ऽ
३	×	२	०
रें म॑ सां रें	नि सां नि प	म॑ प म॑ रे	सा रे ऩि सा
क हे दें गे	तु म॑ बि न	स ग री र	ति याँ सु न [४१]
३	×	२	०

२.२.३ राग : मालारानी

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : आरोह में गंधार तथा धैवत एवं अवरोह में निषाद तथा मध्यम

जाति : औडव- औडव

स्वर : मध्यम स्वर तीव्र बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : रे

गायन समय : रात्रि का प्रथम प्रहार

आरोह : सा, रे, मं प, नि सां

अवरोह : सां ध, प, ग रे, सा

पकड़ : ऩि सा, रे मं प, ध मं प, ग, रे, सा रे, ऩि, सा, ध़ प़,सा

विशेषता : कल्याण थाट का यह आधुनीक स्वरुप है। इस राग में दो रागों का मिश्रण दिखाई देता है । श्यामकल्याण ‘सा, रेमंप, रेमंपध मंप, रेमंपनीसां, धपमंप’ इन स्वरावली में छाया रूप दिखाई देता है | तथा अवरोह में कल्याण । कल्याण थाट के दो मध्यम लगने वाले रागों के अनुसार इस में भी अंतरे का उठान ‘पपसां’ ‘पधपपसां’ इस प्रकार होता है । इस राग में ‘सांरेंध’ तथा ‘पधग’ यह दो संगती बीच-बीच में ली जाती है। इस राग में निषाद पर न्यास किया जाता है।[४२] कई गुणीजनों का मानना है की इसमें बहुत कुछ कामोद का आभास होता है। परन्तु कामोद का मुख्य अंग जैसे की ‘रेप’ तथा ‘गमप गमरेसा’ इस राग में है ही नहीं। अवरोह में इस राग

में ‘प ग रे सा’ यह स्वर समूह आते ही श्यामकल्याण की छाया दूर हो जाति है | [४३]

स्वर विस्तार: सा सारेसासा ऩि, रेऩि, ऩि सा, ध़ प़, प़ ऩि-सा। ऩि सा, ऩि सारेमं, रेमं, रेमंप ग रे, ऩिसा। गगरेसा ऩिसारेमंप-, मंप, मंपधप, धमंप, ग, रे, मंपधग, रे, मंपग- रे सा। गगरेसा ऩिसारेमंपनि, ऩि नि, रेमंपनि, मंपनि, रेमंपनि, सां। पनिसां ध,प, रेमंपनि सांरेंनिसां, ध, प, धमंप, ग, रे, सा। पप सां, पपसांसां रेंसां, ऩिसारेमंपनिसां, निसांगरें गं रें नि सां, रें सां ध प, रेमंप सां ध प, रेमंपनिसांरें, सांरेंध, पधग, रे, नि, सा। रेमंपनि सांसांनिसां धपमंप गरे सा-, रेमंपनिसां निसांरेंध-प-, पधमंप गरे सा।[४४]

राग : मालारानी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : पैंया परुँ तोरे कन्हैयाँ, छाड़ दे मोहें ढ़ीठ ये डगरीया।
अंतरा : तुमतो दाता सकल जगत को, पार करो मोहे तुम्हरी नगरीयाँ।

स्थायी

															ग
															पैं
ग	रे	-	सा	ऩि	-	सा	-	रे	मं	प	ध	प	मं	प	मं
ऽ	या	ऽ	प	रूँ	ऽ	ऽ	ऽ	तो	ऽ	रे	क	न्है	ऽ	याँ	छा
३				×				२				०			
प	सां	ध	प	मं	ध	मं	प	रे	मं	पध	मंप	ग	रे	सा	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ड	दे	ऽ	मो	हे	ढ़ी	ठ	येऽ	डऽ	ग	री	या	पैं
३				×				२				०			

अंतरा

प	प	सां	सां	सां	-	सां	-	नि	सां	रें	सां	नि	सां	ध	प
तु	म	तो	ऽ	दा	ऽ	ता	ऽ	स	क	ल	ज	ग	त	को	ऽ
३				×				२				०			
मं	पं	गं	रें	सां	सां	ध	प	रेमं	पध	मंप	धप	ग	रे	सा	ग
पा	ऽ	र	क	रो	ऽ	मो	हे	तुऽ	म्हऽ	रीऽ	नऽ	ग	री	याँ	पैं
३				×				२				०			

२.२.४ राग : सांझ

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्ज्य

जाति : औडव-औडव

स्वर : मध्यम तीव्र बाकी सब शुद्ध

वादी : ग

संवादी : नि

गायन समय : संध्याकाल

आरोह : सा ग, मं ध, नि, सां

अवरोह : सां नि, ध मं ग, मं ग सा

पकड़ : मं ग सा, ऩि- ध़ ऩि, म़ं ध़ सा

विशेषता : यह एक अप्रचलित मधुर राग है । यह राग सायंगेय होने के कारण इसे सांझ का हिंडोल भी कहते हैं । हिंडोल राग में निषाद को प्राबल्य देने से यह राग सामने आता है । हिंडोल में धैवत का प्रमाण बढ़ाकर निषाद का प्रमाण कम कर दिया जाता है । ऐसा भी कह सकते हैं की हिंडोल में निषाद दुर्बल तथा सांझ में धैवत का प्राबल्य कम है । अवरोह में 'मं ग सा, ऩि- ध़ ऩि-, म़ं ध़ सा' इस प्रकार निषाद को दीर्घ रखते हैं । अंतरे पर 'मं ध सां' करके जाते हैं । हिंडोल आरोही तथा सांझ अवरोही वर्ण का राग है । हिंडोल में जिस तरह तार षड्ज पर न्यास करते हैं; वह इस राग में कदापि नहीं किया जाता । हिंडोल में निषाद अल्प तथा आरोह में वक्र है । जब की सांझ में निषाद को संवादी बनाकर सरल प्रयोग किया

गया है ।[४६] दक्षिण हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के मेल करता-६५ मेचकल्याणी से उत्पन्न ; सुनादविनोदिनी' का आरोह-अवरोह इस राग से मिलता-जुलता है। 'सा, ऩि- ध़ ऩि' स्वरों से पुरिया राग का आभास होता है | इसमें कोमल ऋषभ न होने से 'राग पुर्या' से अपने आप अलग होता रहता है । 'म ग, सा' स्वरों से हिंडोल राग की छाया दिखाई देती है | परन्तु सरल निषाद का न्यास युक्त प्रयोग हिंडोल की छाया को दूर करता है | इस राग का चलन मन्द्र-मध्य में अधिक है। कुछ विद्वान इसे मारवा ठाठ का राग मानते हैं |[४७] कुछ गुणीजनों के कथनानुसार सोहनी के स्वरों में रिषभ वर्ज्य करके स्वरों में पुरिया का लगाव रखा जाय |[४८]

स्वर विस्तार: ग सा, ऩि ध़ ऩि-, म़ ध़ सा, ग सा, ऩि स ग सा। गगसा ऩिध़ऩि-, ऩि म़ ध़ ऩि, ग़ म़ ध़ ऩि, म़ ध़ म़ सा ऩि, ऩि ध़ ऩि-, ऩि ग - सा, म ग सा। ध़ऩिसाग, गऩि, ऩिसा, मग, म़ध़ऩिसाग, सा म ग, सा ग म ग, म ग- सा, ऩि ध़ ऩि, म़ ध़ सा। ऩिसगगसाऩिध़ऩिसागम ध नि, ग म ध नि, म ध नि, म नि, म नि ध सां नि, ग, म ध, सां, निध सां, निनिध, म ग सा। गमधनि सां -,म ध सां, नि सां गं सां मं गं सां। नि सां मं गं, मं गं सां, सांसां निधनि-, ध-मग, मनि - ध म ग, गम धग मग, म ग- सा।[४९]

राग : सांझ - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : साँझ भई सब मंगल गावो, हरि दरसन को ध्यान लगावो।
अंतरा : गावो-बजावो रिझावो सब मिल, हरि नाम जप धूम मचावो।

स्थायी

			म॑
			साँ
ग सा नि़ ध़	नि़ - ध़ नि़	म़॑ ध़ नि़ सा	ग - सा नि़
ऽ झ भ ऽ	ई ऽ स ब	मं ऽ ग ल	गा ऽ वो ह
३	×	२	०
नि़ सा ग ग	म॑ ध म॑ ग	म॑ नि ध म॑ग	म॑ ग सा म॑
री ऽ द र	स न को ऽ	ध्या ऽ न लऽ	गा ऽ वो सां
३	×	२	०

अंतरा

म॑ ग म॑ ध	सां - सां सां	सां गं सां -	नि ध नि नि
गा ऽ वो ब	जा ऽ वो रि	झा ऽ वो ऽ	स ब मि ल
३	×	२	०
नि नि - ध	- म॑ म॑ ग	म॑ ध ग म॑	ग - सा म॑ ५०
ह री ऽ ना	ऽ म ज प	धू ऽ म म	चा ऽ वो सां
३	×	२	०

२.२.५ राग : मल्हारी केदार

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : रिषभ तथा गंधार

जाति : औड़व

स्वर : दोनों माध्यम का प्रयोग

वादी : मध्यम

संवादी : षड़ज

गायन समय : रात्री का प्रथम प्रहर

आरोह : सा म ,म प, मंपधनिसां

अवरोह : सांनि ध प, मंपधप मसा

पकड़ : सा म, धपम, प मंप धप म, सा

विशेषता : इस राग में मध्यम से षड़ज पर मींड़ ली जाती है । इस राग में तीव्र मध्यम सिर्फ आरोह में ही लगता है । इस राग के उलट पुलट नाम वाला मतलब की 'केदारमल्हार' नामक षाडव जाति का और एक राग है; जिसके अंतर्गत दो मध्यम तथा दो निषाद लगते है, तथा गंधार वर्ज्य है | जिसका वर्णन षाडव जाति के रागों में किया है |

स्वर विस्तार : सा म, म प, मं प ध प म, म म प, मंप धप म, पध मंप धप म, म प, म सा, सा म, सा प, मं प मं ध प, म सा । सासा ऩिसा ऩि ध़ प़, ऩि ध़ सा, साम, पध मंप म, ऩि ध - प, ध प म, सां नि ध प, मं प म, ध प म, सा।ऩिसा मम सा म प ध, मं प ध प, नि ध सां, सां सांनिसां ध प, ध प म, सा ।

पध पप सां, पप सांसां मं सां, मंमं सां नि ध प म, सा, सा म, मप पध
म॑प धप म, सा ।[५१]

राग मल्हारी केदार - सरगम गीत (त्रिताल)

स्थायी

म॑ प ध प	म म सा सा	म म म -	प - म॑प धप
म॑ प ध प	सां नि ध प	म॑ प म॑प धप	म - - म
ध प सां नि	ध धप प	म॑ प ध प	म - - सा
०	३	×	२

अंतरा

प प नि ध	सां सां सां सां	मं - सां सां	धप म॑प धनि सां
सां सां मं मं	सां नि ध प	म॑प धनी सांनि धप	म - सा -[५२]
०	३	×	२

२.३ खमाज थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.३.१ राग : हंसश्री

थाट : खमाज

वर्ज्य स्वर : धैवत तथा ऋषभ

जाति : औडव-औडव

स्वर : आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह : ऩि सा, गम पनि, सां

अवरोह : सां नि॒ प, नि॒-म प, गमग, प गमग—सा

पकड़ : ऩि॒ प़, म़प़ऩि सा, ऩिसा ऩि॒ प़, ग़म़प़ऩि, म़प़ऩि सा

विशेषता : इस राग के तथा तिलंग राग के स्वर एक ही हैं । परन्तु चलन भेद, न्यास भेद तथा वादी संवादी भेद के कारण यह दोनों एक समान स्वर वाले होने पर भी एक दुसरे से भिन्न दिखाई देते हैं । उसी प्रकार तिलंग साधारणतः चंचल प्रकृति का राग है । जब की यह गंभीर प्रकृतिका राग है । इस कारण इस राग का विस्तार ज्यादातर मन्द्र-मध्य सप्तक में ही अधिक है । इस राग में 'ऩि॒ प़, म़प़ऩि सा' यह संगती बार-बार आती रहती है । इस राग में पुर्वागं में बिहाग तथा उत्तरांग में सारंग का आभास होता है । 'नि॒ म प' की स्वर संगती द्वारा इस राग में अवारोहात्मक मध्यम पर का न्यास बिल्कुल टालते हैं । इन सब बातों के कारण यह दोनों एक-दुसरे से भिन्न दिखते हैं ।

स्वर विस्तार: सा, नि॒ प़, प़ नि़ सा, प़नि़ सा, नि॒प़, म़प़नि़, सा। सासा नि़सा नि॒ प़, ग़म़प़नि़, म़प़नि़, प़नि़ सा। सा, नि॒ प़, म़प़, म़प़नि़ सा, ग़म़प़नि़, प़ नि़ सा। गगसानि॒प़नि़साग, नि़साग, प़नि़साग, मग, नि॒प़म़प़नि़, सा। सगमप गमग, गमप गमग, प गमग, नि॒-प़, म़प़,नि़-सा। गगसानि॒प़,म़प़नि़सा । नि़सागमप, पगमग, सागमप गमग, सागमप नि॒ प, मपनि॒नि॒प, नि॒मप, गमग-सा। नि॒प़, म़प़,नि़-सा, गमपनिसां, नि॒-मप, निसां, निसां गंसां, नि॒प, नि॒प, नि॒नि॒प, मपनि॒प, मनि॒प, नि॒मप, गमग, पमग- सा, नि॒प़, म़प़नि़ सा।[५३]

राग : हंसश्री - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : राजन के राजा महाराजा, गरीब नवाज़ा देत दान मोहे, निकट रखियो तुम अपने प्राण जप।
अंतरा : सकल जगत को तुम रखवाले, रखियो करम लेहो खबरिया।।

स्थायी

प प ग म	ग - सा नि̱	नि̱ प़ म़ प़	नि़ नि़ सा -
रा ऽ ज न	के ऽ रा ऽ	ऽ जा म हा	रा ऽ जा ऽ
३	×	२	०
सा सा म ग	प - प -	प - ग म	ग ग सा सा
ग री ब न	वा ऽ ज़ा ऽ	दे ऽ त दा	ऽ न मो हे
३	×	२	०
ग म प नि	सां सां नि̱ प	नि̱नि̱ म प ग	म ग सा सा
नि क ट र	खि यो तु म	अऽ प ने प्रा	ऽ ण ज प
३	×	२	०

अंतरा

ग म प नि	सां सां सां -	नि̱ प म प	नि - सां -
स क ल ज	ग त को ऽ	तु म र ख	वा ऽ ले ऽ
३	×	२	०
गं मं पं गं	मं गं - सां	नि̱ नि̱ म प	ग म ग सा[५४]
र खि यो ऽ	क र ऽ म	ले ऽ हो ख	ब रि या ऽ
३	×	२	०

२.३.२ राग : खमाजी दुर्गा

थाट : खमाज

वर्ज्य स्वर : रिषभ और पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद
बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : गंधार

संवादी : धैवत

गायन समय : रात्री का दूसरा प्रहर

आरोह : सा ग म ध नि सां

अवरोह : सां नि॒ ध म ग सा

पकड़ : सा नि़॒ ध़ नि़ सा , म ग, म ध नि॒ ध, म ग, सा

विशेषता : राग भिन्न षड़ज के अवरोह में शुद्ध निषाद के स्थान पर कोमल निषाद को रखा है ।[५५] एक और दुर्गा नाम का राग है, जो बिलावल ठाठ जन्य माना गया है, जिस राग के स्वर और स्वरुप इस खमाज ठाठ के दुर्गा से भिन्न है; तथा उसमें गंधार तथा निषाद स्वर वर्ज्य है | जब की इस खमाज ठाठ के दुर्गा में यह दोनों महत्त्वपूर्ण स्वर है | इस राग में 'ध म' की संगती शोभायमान प्रतीत होती है | 'ध म' स्वर संगती के कारण इस राग में बागेश्री का आभास होता है | पूर्वांग में शुद्ध 'ग नि' होने के कारण यह राग बागेश्री से भिन्न हो जाता है | भातखंडे जी ने संवादी 'निषाद' स्वर माना है |[५६] यह एक अल्प प्रचलित राग है | इस राग में

आरोह में बहुधा शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद लिया जाता है, परन्तु कभी-कभी आरोह में भी कोमल निषाद का प्रयोग होता है |[५७]

स्वर विस्तार : सा ऩि धृ,धृ ऩि सा, सा ऩि धृ, सा, म ग, म ध नि ध, म ग, धमग, म ग सा | सा ग म ध, म ध म ग, म ध नि ध, म ध म ग,सा ग म ग, ध म ग,म ध म ग, म ग, सा ग सा, सा ऩि धृ, धृ ऩि सा, ऩि सा

ग म ध नि सां, ध नि सां -, सां गं मं गं सां, सां सां नि सां नि ध, म ग, म ध नि सां नि ध, नि ध म, ध म ग, म ध नि ध म ग, ध म ग, म ग सा, ऩि धृ सा |[५८]

राग : खमाजी दुर्गा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : काहे को प्रीत लगाई तुम, जान गई मैं तोरी चतुराई |

अंतरा : तिरछी नज़रिया लागे प्यारी, दौर के आओ तुम गिरधारी ||

स्थायी

ग म ग सा	ऩि सा ध़ ऩि	सा - ग -	म - म म
का ऽ हे को	प्री ऽ त ल	गा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ तु म
०	३	×	२
ग म ध नि	सां नि॒ ध म	म म ग म	ग - सा -
जा ऽ न ग	ई ऽ मैं ऽ	तो री च तु	रा ऽ ई ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग म ध नि	सां नि सां -	सां गं मंगं सां	नि सां नि॒ ध
ति र छी न	ज़ रि या ऽ	ला ऽ गेऽ -	प्या ऽ री ऽ
०	३	×	२
ध नि सां गं	सां नि॒ ध म	ग ग ग म	धनि॒ धम गम गसा“९
दौ ऽ र के	आ ऽ वो ऽ	तु म गि र	धाऽ ऽऽ रीऽ ऽऽ
०	३	×	२

२.३.३ राग : नागस्वरावली

थाट : खमाज

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : सब शुद्ध स्वर

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्रि

आरोह : सा ग, म प, ध सां

अवरोह : सां -धपम, प ग, मग सा, धसा, गसा मग पम

पकड़ : म ध सां -, धपम- पग-, मग-सा

विशेषता : यह एक कर्नाटक पद्धति का राग है । यह राग 'नागस्वरी, नागेस्वरी' इत्यादि नामों से भी जाना जाता है | राग के आरोह में पंचम दुर्बल रखा जाता है । मांड राग से कुछ मिलता-जुलता राग है । परन्तु मांड से इसकी प्रकृति गंभीर है | इस राग में जो 'प ग' की मींड ली जाती है, वह भटियार का भास कराती है।[६०] नारायणी, प्रतापवरली की तरह इस राग का भी मद्रास इत्यादि प्रान्तों में अधिक प्रचार में है | कुछ गुणीजन वादी स्वर षड्ज को मानते हैं |[६१] दक्षिण में यह २८ वें मेलकर्ता हरिकंभोजी में स्थित है; जो उत्तरहिन्दुस्तानी खमाज ठाठ के समान है |[६२] इस कर्नाटक पद्धति के राग को उ. अमान अली खाँ साहब ने उत्तर हिन्दुस्तानी पद्धति में

परिचित किया | इस राग में गंधार तथा षड्ज के बीच की दीर्घ मिन्ड राग की खूबसूरती बढ़ाती है |

स्वर विस्तार: सा ध़ सा-, सा ग–सा मग–सा । ध़सा गग सा ध़सा ग म-, ध़सा म, प ग, मग प ग, म ग- सा । गगसा ध़सा गम, मप धप म, धपम, प -ग-मग-सा । सगम पपमग सा ग म ध, ग म ध, मप धसां, मम धसां गं सां, धसां गंगं मं गं सां, ध सां ध प म, म ध सां ध प म, धध पम, पग–मग–सा ।[६३]

सरगम गीत : नागस्वरावली (त्रिताल)

स्थायी

प़ ध़ सा -	ग म ग सा	ग म प ग	म ग सा -
ग म प ध	सां प ध म	ग सां ध प	म ग सा -
×	२	०	३

अंतरा

ग म प ध	सां - गं सां	गं मं पं गं	मं गं सां -
सां सां ध प	ध म प ग	म सां ध प	म ग सा - [६४]
×	२	०	3

२.४ भैरव थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.४.१ राग : बैरागी भैरव

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा धैवत

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ तथा निषाद कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा रे म प नि सां

अवरोह : सां नि प म रे सा

पकड़ : रे म प नि प म रे - नि़ रे सा

विशेषता : इस राग को बैरागी भी कहते हैं | भैरव का यह नवीनतम मधुर प्रकार है | इस राग में रिषभ, पंचम तथा मध्यम पर न्यास किया जाता है | पूर्वांग में भैरव थाट जन्य गुनकली के स्वर 'सा रे म रे सा' तथा उत्तरांग में मधमाद सारंग के स्वर 'प नि सां नि प' इत्यादि के मिश्रण से इस राग का निर्माण हुआ है |[६५] इस राग में रिषभ आन्दोलित है; जो भैरव अंग प्रदर्शित करता है, तथा इस स्वर पर बार-बार न्यास भी किया जाता है|[६६] पं. विनायकराव पटवर्धन जी ने 'राग विज्ञान' सप्तम भाग के अन्तर्गत इसमें पूर्वांग में 'भैरव' तथा उत्तरांग में 'सारंग' के स्वरों का मेल बताया है|[६७]

स्वर विस्तार : सा - सारे॒सासा नि़॒ प़, प़ नि़॒ सा, प़ नि़॒ सा रे॒ सा, सा रे॒ म रे॒ सा, सा रे॒ म, म प, म प म रे॒, रे॒ म प म रे॒, म रे॒, नि़॒ रे॒ सा सारे॒ममरे॒सासारे॒मप, मप नि॒ प म, म प म रे॒, नि़॒ रे॒ सा। सारे॒ममरे॒सानि़॒ सारे॒मप नि॒, प नि॒ सां सां - सांरें॒सांसां नि॒ प, म प नि॒ प म रे॒, म रे॒, नि़॒ रे॒ सा |[६८]

राग : बैरागी भैरव - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: सुरस साधले रसिक नाद सुर। शब्द सलोने लय ताल परन सों|
अंतरा: अमर बिनत है गुनियन सों नित| साधत विद्या दानी जतन सों|

स्थायी

म प म रे॒सा	सा रे॒ सानि॒ प़	नि़॒ सा नि़॒ सा	- रे॒ सा सा
सु र स साऽ	ऽ ध लेऽ ऽ	र सि क ना	ऽ द सु र
०	३	×	२
सा रे॒ म म	प प नि॒ नि॒	पनि॒ सांरें॒ सां नि॒	प म रे॒ सा
श ब द स	लो ने ल य	ताऽ ऽऽ ल प	र न सों ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म म म म	प प नि॒ -	सां सां सां सां	रें॒ - सां सां
अ म र बि	न त है ऽ	गु नि य न	सों ऽ नि त
०	३	×	२
सां रें॒ सां नि॒	प नि॒ प म	पनि॒ सांरें॒ सां नि॒	प म रे॒ सा
सा ऽ ध त	वि ऽ द्या ऽ	दाऽ ऽऽ नी ज	त न सों ऽ ६९
०	३	×	२

राग : बैरागी भैरव - एकताल (विलंबित)

स्थायी : भज मन तूँ राम नाम, तुम्हरे मन अन्धकार दूर करे तेरो नाम|
अंतरा : सकल जगत नमन करत, विद्या बुद्धि मुक्ति देवे, ‘अमर’ करे तेरो नाम|

स्थायी

सा रे	म प	नि सां	नि प	म [म]रे	रे सा
भ ज	म न	तूँ ऽ	रा ऽ	म ना	ऽ म
×	०	२	०	३	४
सा रे	म म	प प	[सां]नि सां	सां निप	नि नि
तु म्ह	रे ऽ	म न	अ ऽ	न्ध काऽ	ऽ र
×	०	२	०	३	४
सांनि रें	सां निप-नि	पम– मपनिसां	रेंरेंसांनिसां निपम-	निप– [म]रे	रे सा
दूऽ ऽ	र कऽऽऽ	रेऽऽ तेऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ रोऽऽऽ	ऽऽऽऽ ना	ऽ म
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म म	म म	प नि	सां सां	रेंसांनि- रेंसांनिसांनिसांरें	सां सां
स क	ल ज	ग त	न म	नऽऽऽ कऽऽऽऽऽऽऽ	र त
×	०	२	०	३	४
रें मं	रें रें	सां रेंसांसांनि	निसांरेंरेंसां निसांरेंसां	सां निप	नि नि
वि ऽ	द्या ऽ	बु द्धीऽऽऽ	मुऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	क्ति देऽ	ऽ वे
×	०	२	०	३	४
नि रें	सां निप-नि	पम– मपनिसां	रेंरेंसांनिसां निपम-	निप– [म]रे	रे सा
अ म	र कऽऽऽ	रेऽऽऽ तेऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ रोऽऽऽ	ऽऽऽऽ ना	ऽ म[७०]
×	०	२	०	३	४

२.४.२ राग : गौळ

थाट : भैरव, मेल १५ माया मालवगौड़

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा धैवत

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ कोमल

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा, रे म प नि सां

अवरोह : सां नि प म रे सा

पकड़ : स म, म प म, प नि, प म, प म, रे सा

विशेषता : यह एक दक्षिणात्य अल्प प्रचलित भैरव का प्रकार है । राग भैरव में गंधार तथा धैवत वर्ज्य करने से इस राग का स्वरुप सामने आता है | इस राग की रचना में -लक्षणगीत 'मेल भैरव तामें ध ग बरज किन्हें' झपताल में है |[७१]

२.४.३ राग : देशगौड़

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा मध्यम

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ तथा धैवत कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा, रे॒, रे॒ प, ध॒, नि सां।अथवा सा रे॒ सा, प ध॒ नि सां

अवरोह : सां नि ध॒ - प, रे॒, रे॒ सा। सां नि ध॒ प सा रे॒ सा

पकड़ : रे॒, रे॒ प, ध॒निसां निध॒ - प, रे॒ - रे॒ सा

विशेष : यह एक दक्षिणात्य अल्प प्रचलित भैरव का प्रकार है । यह गंभीर प्रकृतिका राग है | इस राग में भी 'देवरंजनी', 'मेघरंजनी' के समान दोनों पास के स्वर एक साथ वर्ज्य है । वैसे देखा जाय तब दो पास-पास के स्वर एक साथ वर्ज्य होना शास्त्रोक्त रीति से असम्मत माना जाता है। मेलकर्ता १५ मायामालवगौड़ से इस राग की उत्पत्ति मानी गई है । इस राग में 'रे॒ प' की संगती से 'श्री' राग की छाया सामने आती है; परन्तु धैवत को बार-बार सामने लाकर 'भैरव' दिखाते रहने से 'श्री' दूर होता है । दक्षिण में 'प सारे॒सा' इस प्रकार षड्ज पर वक्र रूप से अवरोहात्मक आते हैं फिर भी ज्यादातर 'प रे॒ सा' इस प्रकार सरल अवरोहात्मक प्रयोग होता है । साप, रे॒प, परे॒, प सारे॒सा, रे॒ध़॒, ऩिध़॒सा, निसां ध॒प, इत्यादि रागवाचक

स्वर-संगतियाँ इस राग में बार-बार दिखाई देती है |[७२] ‘मारिफुन्नग़मात (प्रथम भाग)’ के अंतर्गत इस राग का वादी धैवत तथा संवादी रिषभ माना है ।

स्वर विस्तार : सा - सारेसासा ऩि ध़ प, ध़ ऩि सा, सा रे रे प, रे रे सा, ऩि ध़ - ऩि सा, रे रे सा। रेरेसाऩिध़ऩिसा रे रे प, रे रे प- ध - प, नि - ध - प , प-ध-नि सां, निध-प, धनि सां -,ध ध - प, ध - निसां, निध - प, ध-प-,रे-रे-सा। प-ध-निसां, निसां - -, रेंरेंसांनिसां रेंसांनिसां-निध- - प, सा प, रे प, धधप, ध ध प - रे प रे रे सा, सारे प, निध प, ध, निसां, रें सां, निधपधप, रेप, रेप, सारेसा, ऩि ध़ सा |[७३]

राग : देशगौड़ – एकताल (मध्यलय)

स्थायी: प्रथम सुरन को साध, श्रुतियन भेद न समझायो।
अंतरा: नाद सागर अपरम्पार, कोऊ न पायो पार॥

स्थायी

सा	सा	(प)रे	प	प	-	प	प	ध	-	प	-
प्र	थ	म	सु	र	ऽ	न	को	सा	ऽ	ध	ऽ
×		०		२		०		३		४	
प	ध	नि	सां	ध	प	रे	प	रे	रे	सा	-
श्रु	ति	य	न	भे	द	न	स	म	झा	यो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	-	ध	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	-	सां
ना	ऽ	द	सा	ग	र	अ	प्रं	ऽ	पा	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
धनि	सां	नि	ध	प	-	ध	प	रे	रे	सा	- ७४
कोऽ	ऽ	ऊ	न	पा	ऽ	यो	पा	ऽ	ऽ	र	ऽ
×		०		२		०		३		४	

२.४.४ राग : झीलफ

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : रिषभ तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत कोमल

वादी : धैवत कोमल

संवादी : गंधार

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा, ग म, प ध॒, सां

अवरोह : सां ध॒ प, म ग, सा

पकड़ : ग म प, ध॒ ध॒ प, म प म, ग, म सा

विशेषता : भैरव ठाठ का यह एक अल्प प्रचलित प्रकार है | इस राग का प्रचार हज़रत अमिर खुसरो ने किया ऐसी मान्यता है | राग झिलफ के दो प्रकार है १) आसावरी ठाट २) भैरव ठाट | आसावरी ठाट का जो झिलफ राग है वह संपूर्ण जाति का राग है; जिसमें जौनपुरी तथा षट राग का मिश्रण है | जो भैरव ठाठ के झिलफ राग से भिन्न है |

भैरव ठाठ के झिलफ में 'रे॒, नि' वर्ज्य है | इस राग में बार-बार मध्यम पर न्यास एवं 'म सा' संगती का प्रयोग, इसी प्रकार धैवत से पंचम की सावकाश मिन्ड युक्त संगति का प्रयोग इत्यादि भैरव ठाठ के झिलफ में बार-बार दिखाई देता है | इस राग का चलन मध्य तथा तार सप्तक में राग को अधिक उजागर करता है | भैरव ठाठ के झिलफ में कुछ गुणीजन कोमल

रिषभ तथा निषाद का कभी-कभी अल्प प्रयोग करते हैं | परन्तु ज्यादातर कोमल रिषभ तथा निषाद यह दोनों स्वर वर्ज्य प्रकार ही अधिक प्रचार में है |[७५] भातखंडे जी ने रिषभ तथा निषाद को दुर्बल माना है |[७६] पं. मधुसूदन पटवर्धन के मतानुसार राग भैरव में रिषभ तथा निषाद वर्ज्य करने से इस राग के दर्शन होते हैं | यह राग अप्रचलित की श्रेणी का होने पर भी वर्तमान में लोक प्रिय हो सकता है |[७७]

स्वर विस्तार : सा ग म प, ध, ध प, ध, प, म, मप, ग, मसा, ग म प, धप, पपमग गमप ध प म ग, ग म प ध, प, ध, सां ध सां ध, प, प ध म प ग म ग , सा |

ध ध प म पम ग , ग म ध, ध, सां, सां मं, गं सां, गंगंसां धसां, सां ध, प, ध ध प, मप, गम, सागमप, म, पम,पग, म, सा |[७८]

राग : झीलफ - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : दरस बिन सुना लागे देस, विदेश पिया सों मिलावो रे कोऊ करुहूँ आली तन मन से |
अंतरा : का करूँ कित जाऊँ सखी री, धरूँ जोगन को भेस ||

स्थायी

म
द

प म ग सा	ध - - ध	- प - ध	धप मप म सा
र स बि न	सु ऽ ऽ ना	ऽ ऽ ला गे	देऽ ऽऽ स वि
३	×	२	०
ग म प म	ग - सा प	प ध प ध	सां - सांधसां ध
दे ऽ श पि	या ऽ सों मि	ला ऽ वो रे	ऽ ऽ को ऽ
३	×	२	०
प , सां सां	सां - सां सां	सा सा ग म	प म प म
ऊ , क र	हूँ ऽ आ ली	त न म न	से ऽ ऽ द
३	×	२	०

अंतरा

धप म प ध	धसां - - सां	सां - सां सां	- सां सांध -
काऽ ऽ ऽ क	रूँ ऽ ऽ कि	त जा ऽ ऊँ	- स खी ऽ
३	×	२	०

प सा म -	, ध प ध	प ध धप मप	मप धसां धप म[७९]
री, ध रूँ ऽ	, जो ऽ ग	न को भेऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ सऽ द
३	×	२	०

२.४.५ राग : देवरंजनी

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : रिषभ तथा गंधार

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत स्वर कोमल तथा दोनों निषाद शेष स्वर शुद्ध

वादी : सा

संवादी : म

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा, म, प, ध॒, नि सां

अवरोह : सां, नि ध॒, नि ध॒ प, म, सा

पकड़ : म प ध॒ सां, नि सां, ध॒, नि ध॒, प म, प म सा

विशेषता : यह एक दक्षिणात्य राग है। उत्तर में भी यह अधिक लोकप्रिय हुआ है । 'राग लक्षण' में इस राग का परिचय दिया गया है। इस राग की उत्पत्ति दक्षिण मेलकर्ता १५ मायामालवगौड़ से हुई है। आरोह में बहुदा "ध॒सां निसां" तथा बिच-बिच में "ध॒निसां निसां" इस प्रकार शुद्ध निषाद का अल्प प्रयोग किया जाता है। उसी प्रकार अवरोह में बहुदा "सांध॒नीध॒" तथा बीच-बीच में "सांनिध॒प" इस प्रकार शुद्ध निषाद का प्रयोग किया जाता है। कोमल निषाद का प्रयोग विवादी के नाते बीच में 'ध॒नि॒ध॒प' इस प्रकार किया जाता है। यह एक उत्तरांग वादी गंभीर प्रकृति का राग होने से विलंबित ख्याल, गत के लिए अधिक उपयुक्त है। इसे दक्षिण में 'देवरंजी' कहते हैं;

जिसे माया-मालवगौड़ मेल का माना है | अपने यहाँ यह देवरंजनी के नाम से प्रसिद्ध हुवा है |

दक्षिण में देवरंजनी राग मेलकर्ता २२ खरहरप्रिया से जन्य एक राग है, जिसका स्वरुप "सा ग रे म प ध नि सां - सां ध प म ग म रे सा" इस प्रकार का है। जिसके अंतर्गत आरोह में 'ग' वक्र तथा 'नि' शुद्ध वर्ज्य है | 'ग' तथा 'नि' कोमल एवम गंधार आंदोलित है। वो संपूर्ण-षाड़व जाति का माना गया है। जो अपने यहाँ के देवरंजनी से बिलकुल भिन्न है। उत्तर भारत में प्रचलित 'देवरंजनी' राग की रचना भैरव राग से रिषभ तथा गंधार को वर्ज्य करने से हुई है।[८०] इस राग के अवरोह में कोमल निषाद का स्पर्श प्रयोग किंचित शम्य है। इस राग का उठान षडज से होता है तथा विश्रांति भी षडज पर होती है। उत्तरांग प्रबल है |[८१] 'अभिनव गीतांजलि' भाग चार (रामाश्रय झा) पृ. १०९ पर इस राग का विवरण दिया है उसमें उन्होंने कोमल निषाद की बिलकुल चर्चा नहीं की है।[८२] इस राग में आसावरी का आभास होता रहता है।[८३]

स्वर विस्तार : सा ध़ सा-, सा म प, म, पम, सा-, ऩि ध़ सा-, ऩि सा ध़, ध़ सा-, ऩि सा-, ध़ऩिध़ प़, म़प़, ध़, ध़सा-, म, म, पम, प, म, सा-। सा, म, मप, ध, प, धम, प, मप, धम, प, म, सा-, सा, ध़ध़ सा-, ऩिसा-, मपधप, म, सा, प, म, पम, सा।
मप ध, प, धम, प, साम, मप धनिध-प, पध- सां-, निसां- ध-प-, मपध, सां-, निसां- नि ध- प, पध म, पम, सां, ध़ सा। मप ध ध सां, निसां, साम मप पध धसां- निसां, ध धसां निसां, मंमं पंमं - सां, मम मप म सा, ध़ सा, मपधसां, निसां, नि ध - प -, धनिध-प, म, पम, सा।[८४]

राग : देवरंजनी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी: भुख्यो मन माया उरझायो जो जो कर्म कियो लालच लगी तिहि तिहि आप बंधायो।
अंतरा: समझ न पड़ी विषय रस राच्यो यश हरि को बिसरायो।। **नानक गुरु**

स्थायी

पध नि ध -	प प ध म	म - मप धप	म - (म)सा -
भुऽ ऽ ख्यो ऽ	म न मा ऽ	या ऽ उऽ रऽ	झा ऽ यो ऽ
०	३	×	२
ध - ध -	सा - सा सा	म - म -	म म प प
जो ऽ जो ऽ	क ऽ र्म कि	यो ऽ ला ऽ	ल च ल गी
०	३	×	२
ध ध सां सां	ध - ध नि	ध प ध म	प म म सा
ति हि ति हि	आ ऽ प बं	धा ऽ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म म म म	प (नि)ध - (नि)ध	(नि)ध (नि)ध सां सां	सां - सां -
स म झ न	प ड़ी ऽ वि	ष य र स	रा ऽ च्यो ऽ
०	३	×	२
सां सां मं मं	मं सां सां सां	(नि)ध प ध म	प म म सा(८५)
य श ह रि	को ऽ बि स	रा ऽ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

राग : देवरंजनी - झपताल

स्थायी : रैन बीत गई प्रात आई, स्वरन मंगल बेला आनंद छाई।

अंतरा : बोलत पंछी गण मधुर-मधुर वाणी, पिया जागो प्यारे भोर चढ़ आई।

स्थायी

सा -	म प -	ध॒ प	म म सा
रै ऽ	न बी ऽ	त ऽ	ग ऽ ई
×	२	०	३
सा -	सा नि़ ध़॒	सा -	म प म
प्रा ऽ	त आ ऽ	ई ऽ	ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
सा सा	सा म -	प प	ध॒ सां सां
स्व र	न मं ऽ	ग ल	बे ऽ ला
×	२	०	३
सां -	ध॒ ध॒ प	पपध॒सां -	निध॒ पम सा
आ ऽ	नं ऽ द	छाऽऽऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ई
×	२	०	३

अंतरा

म -	प - ध़	सां -	सां सां सां
बो ऽ	ल ऽ त	पं ऽ	छी ग ण
×	२	०	३
ध़ ध़	सां सां सां	सांमं -	सां - सां
म धु	र म धु	र ऽ	वा ऽ णी
×	२	०	३
सां सां	सां - सां	सां ध़	ध़नि़ ध़ प
पि या	जा ऽ गो	प्या ऽ	ऽऽ रे ऽ
×	२	०	३
ध़ प	म - म	मपध़सां -	निध़ पम सा
भो र	च ऽ ढ़	आऽऽऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ई
×	२	०	३

२.४.६ राग : मंगल भैरव

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा रे म प ध सां

अवरोह : सां ध प म रे सा

पकड़ : रे म प ध, ध प म- रे, म - रे सा

विशेषता : यह राग दो-तीन प्रकार से गाया जाता है | एक औडव प्रकार है जिसमें गंधार निषाद वर्जित है तथा सिर्फ रिषभ स्वर कोमल है | जिसे यहाँ वर्णित किया गया है | जो शोधार्थी को पं.मनीप्रसाद जी (किराना) से प्राप्त हुआ है |

स्वर विस्तार : सा, रे म - रे, सा, सा रे म-, रे म प -, म प ध सां-, ध सां - रें सां, सां ध प म रे -, सा रे प म -रे-, सारे ध़ ध़ सा|

दुसरे प्रकार में गंधार लिया जाता है | जिसका वर्णन पं. विनायकराव जी ने 'राग विज्ञान भाग ७' में किया है | इस प्रकार में 'प सा' को वादी-संवादी मानकर जिसके अंतर्गत रिषभ कोमल है तथा बाकी स्वर शुद्ध है, एवं निषाद

स्वर वर्ज्य होने से षाडव जाति का राग है; जिसके आरोह-अवरोह इस प्रकार है- “सा रे म प ध सां सां ध प म रे, सा रे ग रे सा, ध़ ध़ सा” अर्थात ‘सा रे ग रे सा’ गंधार युक्त स्वरावली के टुकड़े वाला है, पकड़- मप ध प, म ^गरे, सा रे सा, ध़ ध़ सा |[८७]

तीसरे प्रकार में रिषभ एवं धैवत कोमल है तथा गंधार वर्ज्य है | जो षाडव प्रकार है; जिसका वर्णन जयसुखलाल शाह ने अपनी पुस्तक ‘भैरव के प्रकार’ में किया है; जिसका आरोह-अवरोह स्वरुप इस प्रकार है- सा, रे, म प, ध, नि, सां- सां, नि ध, प, म रे, सा, पकड़: म प ध, नि सां, नि ध, प, म, रे, रे सा |[८८]

और एक प्रकार है जिसके अंतर्गत रिषभ धैवत कोमल है तथा गंधार निषाद शुद्ध है |[८९]

राग मंगल भैरव - (द्रुत त्रिताल)

स्थायी: जपले तूँ नाम निस दिन मनवा, जासो कटे तेरो जगत को फंद|

अंतरा: झूठी काया झूठी माया ‘ध्यानरंग’ जपे हरि नाम||

स्थायी

			प
			ज
म रे̲ - सा	म - - -	म म प म	रे̲ रे̲ सा ध़
प ले ऽ तूँ	ना ऽ ऽ म	नि स दि न	म न वा जा
३	×	२	०
ध़ सा - सा	रे̲ - सा सा	रे̲ म प ध	[प]म - म प
ऽ सो ऽ क	टे ऽ ते रो	ज ग त को	फं ऽ द ज
३	×	२	०

अंतरा

म - प ध	सां - सां -	ध - रें̲ -	सां - धप म
झू ऽ ठी ऽ	का ऽ या ऽ	झू ऽ ठी ऽ	मा ऽ याऽ ऽ
×	२	०	३
रें̲ सां ध ध	प म रे̲ रे̲	सा - सा प	९०
ध्या न रं ग	ज पे ह रि	ना ऽ म ज	
×	२	०	

राग मंगल भैरव - (विलंबित एकताल)

स्थायी : निस दिन ध्यान लगाऊं, अपने प्रीतम को पाऊं|

अंतरा : मंगल गाऊं चौक पुराऊं, ध्यानरंग पिया जपन पाऊं|

स्थायी

,,,सा रे॒मपध पम- - मरे॒ सा | म - - पम रे॒ - ध॒ रे॒ | सा साध॒ ध॒ध॒ रे॒ -
,,,नि सऽऽऽ ऽऽऽऽ दि न | ध्याऽऽ नल गा ऽऽऽ | ऊं अ पऽ ऽ ऽ
४ | × | ०

सा - रे॒ रे॒रे॒ म-पम | धपध - - सांधध सां - धध | रे॒ंसां सांधमपम
ने पि ऽऽ ऽऽतम | कोऽऽऽ पाऽ ऽ ऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽऽऽ
२ | ० | ३

पपमरे॒ - मसा- - सा
ऽऽऽऽ ऽ ऽऊंऽऽ नि
४

अंतरा

म ,प- - ,ध - - | सां सांधधरे॒ं- | सां सांधधरे॒ंरे॒ं | सां- धपमप म सासारे॒म
म गऽऽ लऽऽ | गा ऽऽऽऽ | ऊं चौकऽपु | राऽ ऽऽऽऽ ऊं ध्यानरंग
४ | × | ० | २

धपध- - सांधधरे॒ंसां | धसांरे॒ंमं - रे॒ं सां सांधप,ध पम,सारे॒ - - |
पियाऽऽ जपऽन | ऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ पाऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ |
० | ३

मसा - - सा ९१
ऊंऽ ऽ ऽ नि
४

२.४.७ राग : क्षणिका / क्षितिजा / चंद्रगुणक्री

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ तथा धैवत कोमल बाकी शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा <u>रे</u> म <u>ध</u> नि सां

अवरोह : सां नि <u>ध</u> म <u>रे</u> सा

पकड़ : म <u>ध</u> नि सां नि <u>ध</u> म- <u>रे</u> <u>रे</u> सा

विशेषता : यह एक गंभीर प्रकृति का आलाप प्रधान, मिन्ड प्रधान, उत्तरांग वादी भैरव का अल्प प्रचलित प्रकार है । इस राग में गुणक्री, जोगिया तथा चन्द्रकौन्स इन तीनों रागों का आभास होता है । 'सा <u>रे</u> म म <u>रे</u> सा' में गुणक्री, जोगिया तथा 'म <u>ध</u> नि सां' में चन्द्रकौन्स की छाया दिखाई देती है । परन्तु गुणक्री में निषाद नहीं है; जोगिया में आरोह में निषाद नहीं, गुणक्री तथा जोगिया में पंचम है | तथा चन्द्रकौन्स में रिषभ नहीं है, इन सब बातों से यह राग इन तीनो रागों से अलग दिखाई देता है। इस राग में '<u>रे</u> <u>ध</u>' स्वर पर भैरव के समान आन्दोलन है । इस राग का आरोह-अवरोह सरल है फिर भी आरोह-अवरोह में क्रमशः बहुधा '<u>ध</u>सां निसां <u>ध</u>सां' तथा 'सां <u>ध</u> नि <u>ध</u>' इस प्रकार '<u>ध</u>सां' एवं 'सां<u>ध</u>' का प्रयोग होता

है । उसी प्रकार बिच-बिच में 'ध॒ नि सां' तथा 'सां नि ध॒' इस प्रकार सरल संगती का भी प्रयोग होता है । यह कहना भी गलत न होगा की राग चन्द्रप्रभा के स्वरों में रिषभ को कोमल करने से इस राग के स्वर सामने आते है ।

स्वर विस्तार : सा रे॒ - सा, रे॒रे॒सानि़सा नि़-ध़॒, सा, नि़ सा, नि़ ध़॒-, म़ ध़॒ सा नि़सा। सारे॒ म, रे॒ म रे॒ सा, रे॒रे॒सानि़सारे॒म ध॒ - म, मध॒ निध॒ - म, म ध॒ - नि सां, नि सां नि ध॒ म, ध॒ म, रे॒ - रे॒ सा। सारे॒ममरे॒सानि़सारे॒म ध॒ नि ध॒-, सां - -, ध॒ नि सां रें॒ - सां, सां रें॒ मं रें॒- सां रें॒रें॒सांनिसां रें॒सां नि ध॒ म, ध॒ म रे॒ - रे॒ - सा।[१२]

राग : क्षणिका – झपताल (मध्यविलंबित)

स्थायी: पार करो मोरी नैया, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया नबी तुम।

अंतरा: दुःख दरिद्र दूर करन, शरण आयो दाता, बिपदा हरो मोरी, जग के करतार।।

स्थायी

सांसांनिसां	ध॒	म	[नि]ध॒	नि	ध॒	म	[म]रे॒	[म]रे॒	सां
पाऽऽऽ	र	क	रो	ऽ	मो	री	नै	ऽ	या
×		२			०		३		
म	म	ध॒	नि	ध॒	[सां]नि	सां	-सां	-रें॒	-सां
ह	ऽ	ज़	र	त	नि	ज़ा	ऽमु	ऽदी	न
×		२			०		३		
सांनिरें॒-	सां	नि	ध॒	म	ध॒नि	[म]ध॒	[रे]म	रे॒	सा
औऽऽऽ	लि	या	ऽ	ऽ	नऽ	बी	ऽ	तु	म
×		२			०		३		

अंतरा

म	-	ध॒	ध॒	-नि	[ध]सां	सां	सां	-रें॒	-सां
दुः	ख	द	रि	ऽद्र	दू	र	क	ऽर	ऽन
×		२			०		३		
ध॒	नि	सां	रें॒रें॒मं	रें॒	-	सां	नि-	ध॒	सां
श	र	ण	आऽऽ	यो	ऽ	ऽ	दाऽ	ऽ	ता
×		२			०		३		
ध॒	नि	सांरें॒	-	नि	सा	-	नि	ध॒	म
बि	प	दाऽ	ऽ	ह	रो	ऽ	मो	ऽ	री
×		२			०		३		
ध॒	निसां	ध॒	मनि	ध॒	म	रे॒	म	रे॒	सा [९३]
ज	गऽ	के	ऽक	र	ऽ	ता	ऽ	ऽ	र
×		२			०		३		

२.४.८ राग : गिरिजा

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : रिषभ और पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत कोमल बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा ग म ध॒ नि सां

अवरोह : सां नि ध॒ म ग सा

पकड़ : ध॒ ऩि सा, ग म, ध॒ नि सनि ध॒, म, ग म, ग सा

विशेषता : ऐसा प्रतीत होता है की राग भैरव में ऋषभ और पंचम निकाल देने से इस राग की उत्पत्ति हुई हो ।[९४] राग भिन्नषड्ज, मधुरध्वनि तथा चंद्रकौन्स यह सब एक जैसे आरोह-अवरोह वाले राग हैं| चंद्रकौंस में गंधार तथा धैवत स्वर कोमल है | मधुरध्वनि (खमाज ठाठ) में धैवत स्वर शुद्ध लिया जाता है, तथा कोमल निषाद का प्रयोग है; सा ग म ध नि॒ सां - सां नि॒ ध म ग सा | भिन्नषड्ज में 'सा ग म ध नि', सब शुद्ध लिए जाते हैं |[९५]

स्वर विस्तार : सा ऩि ध़॒, ध़॒ ऩि सा, ध़॒ ऩि सा ग म, ग म ध॒ म, नि ध॒ म, ध॒ नि सां, नि सां नि ध॒ म, ध॒ म ग, म ग सा ।

सा ग म ध॒, मग म ध॒ नि ध॒, ध॒ नि ध॒ म, सा ग म ध॒ म, ध॒ नि ध॒ नि सां, सां नि ध॒ म, ध॒ म ध॒ नि सां, मं गं मं, गं सां, गं सां नि ध॒, म ध॒ नि ध॒ म, ध॒ म ग सा ।[९६]

राग : गिरिजा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : घर आईला मोरा बालमुवा, फुलवन सेज साजाऊँ री सखी |
अंतरा : सब सखीयाँ मिल मंगल गाओ, फुलवन हार डारूँ गरवा ||

स्थायी

			ग म
			घ र
ध॒नि सांनि ध॒ म	ग सा ध॒ ऩि	सा सा म म	म - - -
आऽ ऽऽ ई ऽ	ला ऽ मो रा	बा ऽ ल मु	वा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
ग सा ग म	ध॒ नि सां सां	नि ध॒ म ग	सा - ग म
फु ल व न	से ऽ ज स	जा ऊँ री स	खी ऽ घ र
०	३	×	२

अंतरा

म म ग म	ध॒ नि सां सां	सां - सां सां	सां गं सां -
स ब स खी	याँ ऽ मि ल	मं ऽ ग ल	गा ऽ ओ ऽ
०	३	×	२
सां गं मं गं	सां नि ध॒ म	म म ग म	ग सा ग म[९७]
फु ल व न	हा ऽ र डा	ऽ रूँ ग र	वा ऽ घ र
०	३	×	२

२.४.९ राग : मेघरंजनी

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : पंचम तथा धैवत

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ कोमल तथा बाकी शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्री का चौथा प्रहर

आरोह : ऩि <u>रे</u> ग म, नि, सां

अवरोह : सां, नि म, ग, <u>रे</u> सा

पकड़ : म ग म, नि सां म, ग <u>रे</u> ग म

विशेषता : यह एक कर्नाटक पद्धति का राग है। इस राग में मध्यम पर न्यास किया जाता है, मतलब मध्यम पर विश्राम किया जाता है । कोई कोई विद्वान इसमें ललित अंग दिखाते हुवे तीव्र मध्यम का भी प्रयोग करते हैं, परन्तु ऐसा करना ही चाहिए यह भी आवश्यक नहीं है । इस राग में बीच-बीच में 'साम' स्वर संगती का प्रयोग होता रहता है । 'राग लक्षण' नामक ग्रन्थ में इसका उल्लेख है । इस राग में विलम्बित गायन सुमधुर लगता है । इस राग का चलन भातखंडे जी ने इस प्रकार बताया है-' ऩि <u>रे</u> ग, म, मग, <u>रे</u>ग, <u>रे</u>सा, म, निसां, <u>रें</u><u>रें</u> सां, निम,ग, म<u>रे</u>ग<u>रे</u>सा, ऩि<u>रे</u>गम' इस तरह दिखाया है। अगर तीव्र मध्यम का प्रयोग करना हो तब ललित अंग से-'नि<u>रे</u>गम, म, मंमग, <u>रे</u> ग, म, ग<u>रे</u>सा' इस प्रकार किया जाता है।[९८] कुछ

गुनीजनों के मतानुसार इस राग के दो प्रकार है। एक प्रकार भैरव थाट से है जिसमें सिर्फ शुद्ध मध्यम प्रयुक्त होता है; तथा दूसरा प्रकार दोनों मध्यम वाला है जो ललितांग से सम्बंधित है; इस दुसरे प्रकार को कुछ गुणीजन मारवा थाट तो कुछ पूर्वी थाट से जन्य मानते हैं। धैवत वर्ज्य होने के कारण कुछ गुणीजन मारवा थाट जन्य मानते हैं, परन्तु मारवा थाट जन्य ललित में शुद्ध धैवत है | जब कि शुद्ध धैवत न होने से मारवा थाट का कोई भी लक्षण विद्यमान नहीं रहता | परन्तु 'ऩि रे॒ ग, नि रे॒ ग म, मं म ग रे॒ ग ' इत्यादि इन स्वरों में पूर्वी के लक्षण मौजूद है | इस वजह से दो मध्यम वाले प्रकार को पूर्वी थाट जन्य माना जा सकता है | मीन्ड युक्त 'साम' की संगती इस राग में सुरेख लगती है, तथा ये दोनों न्यास के स्वर भी हैं । वैसे देखा जाय तब दो पास-पास के स्वर किसी राग में एक साथ वर्ज्य होना शास्त्रोक्त रीती से असम्मत माना जाता है, फिर भी विद्वानों द्वारा मान्यता प्राप्त होने के कारण 'देवरंजनी' तथा 'मेघरंजनी' जैसे रागों को शास्त्रोक्त कोटि में सम्मिलित किया गया है ।[९९] इस राग में तानबाजी का प्रयोग बहुत कम किया जाता है । उसी प्रकार इस राग का चलन मध्य तथा तार सप्तक में अधिक है । भैरव ठाठ के रागों में पंचम तथा धैवत स्वर का जो प्राबल्यत्व रहता है; वह यहाँ मौजूद न होने के कारण यह राग कुछ अलग सा प्रतीत होता है | इस राग में 'नि-म', की मींड रंजकता पैदा करती है | इस राग में तीव्र मध्यम का अल्प प्रयोग है; अगर कोई तीव्र मध्यम का प्रयोग नहीं करना चाहे तो फ़क्त शुद्ध मध्यम से भी स्वर विस्तार कर सकता है |

स्वर विस्तार : सा रे॒ - सा, म-, गम-, ग-, रे॒सा, ऩिरे॒ग-, म-, (गममंम), नि म, सां नि म-, गम (मंम) ग, रे॒ग-,रे॒सानि–म, सा-रे॒-सा,। म-, गम-, नीरे॒गम-, निसां, रें॒सां-, सां मं-, गमंगरे॒-सां-, निसागमनिसां, रें॒सां-, ऩिसांरें॒सां, निम, गम (मंम) म, रे॒ सा-, सा म-,गमगरे॒ सा, ऩिरे॒गम।[१००]

राग : मेघरंजनी - झपताल (मध्यविलंबित)

स्थायी: जागो मोहन प्यारे, ग्वाल बाल भूपत ठाड़े, दरशन काज।
अंतरा: प्रात समय उठे, बन चलन को सारे, बाट तकत है।।

स्थायी

नि़ रे॒	ग म म	म म	म - म
जा ऽ	गो ऽ मो	ह न	प्या ऽ रे
×	२	०	३
ग ग	रे॒ ग -	म -	नि सां सां
ग्वा ऽ	ल बा ऽ	ल ऽ	भू प त
×	२	०	३
सां सां	म - -	ग -	रे॒ ग मम॑
ठा ऽ	ड़े ऽ ऽ	द र	श न काज
×	२	०	३

अंतरा

ग ग	म - नि	सां सां	नि रें॒ सां
प्रा ऽ	त ऽ स	म य	उ ऽ ठे
×	२	०	३
नि नि	रें॒ गं रें॒	सां -	रें॒ सां -
ब न	च ल न	को ऽ	सा रे ऽ
×	२	०	३
सां -	म म म	ग -	रे॒ ग मम॑ १०१
बा ऽ	ऽ ट त	क ऽ	त है ऽऽ
×	२	०	३

२.५ पूर्वी थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.५.१ राग : रेवा

थाट : पूर्वी

वर्ज्य स्वर : मध्यम तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल

वादी : ग

संवादी : ध

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा, रे, ग, प, ध, सां

अवरोह : सां, ध, प, ग, पगरेसा

पकड़ : पग, प ध प ग, रे ग, रे सा, गरेग-

विशेषता : यह राग रेवगुप्ति (रेवागुप्ति) इस नाम से भी जाना जाता है | यह एक अप्रचलित राग है | यह एक पूर्वांग प्रधान राग है । राग विभास से बचाने के लिए धैवत पर न्यास न करते हुए गंधार पर न्यास करना चाहिए | इसमें पूर्वांग प्रबल रखते हुवे विभास से दूर रखने के लिए 'रेग, सा रे, ग, पग, पधग,रेग, परे, ग, रेसा, रेपग' इस प्रकार बार-बार गंधार पर न्यास किया जाता है |[१०२] 'श्री' राग में मध्यम और निषाद वर्ज्य करने से इस राग की उत्पत्ति होती है । 'सारे, रेप' स्वर संगती, वादी स्वर भेद तथा पूर्वांग की प्रबलता के कारण यह राग विभास से अलग दिखाई देता है । पं. विनायकराव पटवर्धन जी ने वादी-सम्वादी क्रमशः 'सा-प' माने हैं | राग विभास के स्वर 'रें सां, ध प, ध प ग रे, इन स्वरों के साथ श्री

राग के स्वर 'रे॒ प, रे॒ ग रे॒ सा' मिलाने से इस राग का अस्तित्व सामने आता है |[१०३] इस राग में पंचम तथा गंधार की संगती रहती है | यह राग अपनी विशेषता के कारण राग तिरबन(त्रिवेणी) तथा श्रीटंक इत्यादि से आसानी से अलग हो जाता है । त्रिवेणी में निषाद स्वर है ।[१०४] भातखंडे जी ने इस राग का वादी-संवादी 'ग' तथा 'ध॒' माना है। मध्यम तथा निषाद वर्ज्य होने से 'गप' संगती स्वाभाविक दिखाई देती है |[१०५]

यह राग दो प्रकार से गाया जाता है | (१) पूर्वी अंग (२) श्री अंग | पूर्वी अंग से गाये जाने वाले रेवा में गंधार का प्राबल्य होता है, जैसे - ग रे॒ ग, रे॒, सा, पग, ध॒पग, रे॒ग, रे॒, सा | तथा श्री अंग से गाये जाने वाले में रिषभ प्रबल होता है, जैसे - [ग]रे॒, [ग]रे॒, ग, रे॒, पगरे॒, रे॒सा, ध॒ प़, सा | श्री अंग से गाये जाने वाला प्रकार बहुत रंजक है | पूर्वी अंग के प्रकार में वादी स्वर को लेकर मतभेद पाएं जाते हैं | कुछ गुणीजन षडज तो कुछ गुणीजन गंधार मानतें हैं | परन्तु गंधार पर महत्वपूर्ण न्यास करते हुए वादी स्वर षडज और पंचम संवादी भी मान सकते है | पूर्वी अंग दिखाने के लिए 'ग रे॒ ग' यह टुकड़ा बार बार लिया जाता है |

श्री अंग से गाने वाले वादी-संवादी क्रमश: रिषभ तथा पंचम मानते है | इस राग का गायन-वादन ज्यादातर श्री राग के पश्चात तथा पूर्वी राग से पहले अधिक सुंदर प्रतीत होता है | यह एक गंभीर प्रकृति का राग है |

इसे भैरव थाट के प्रातगेय विभास राग का साँयंगेय जवाब भी कहते है | इस राग में पंचम को अधिक बढ़ाने से राग में प्रातगेयत्व आ सकता है; इस वजह से पंचम के प्रमाण पर ध्यान देना चाहिए | कई गुणीजन पंचम के परिमाण (प्रमाण) को ध्यान में रखते हुए साँयंगेत्व दिखाने के लिए 'प ग' मींड से लेते हैं | आरोह में रिषभ को बार-बार दिखाते हुए 'रे॒, ग' बढ़ाने से प्रातगेयत्व दुर होता है |[१०६]

स्वर विस्तार: सा ^ग^रे ^ग^रे सा, ध़ सा ^ग^रे ^ग^रे सा । रेरेसा ध़सा रे ग, रेगरेग--, रेसा रेग, सारेग- पग पगरेसा । रेरेसा ध़सारेग प ग, रेग, रे प ग-, परेग-, साग-रेपरेग-, पग, प ग रे सा । सरेगगरेसा सारेगरेग, प-ग, रेग, रेगरेप-, ^ग^रे ^ग^रे -सा, रेसा गरे प, धगपग, पग, पगरेसा, सरेगरेसा रेगरेग- । प ग प ध, प सां--, धसां रें गं रें सां रें, रें सां धसां रेंसां ध प गरेग, पग, रेग, रे, सा |[१०७]

राग : रेवा - झपताल

स्थायी : पिहरवा मोरी बैंया परत गई अब सैंया।
अंतरा : सुघर चतुर तुम तो 'सदारंग' रंगीले मोरे सैंया।

स्थायी

ग रे	सा सा रे	सा रे	ग ग प
पि ह	र ऽ वा	मो री	बैं या ऽ
×	२	०	३
प ग	प सां प	प धप	ग पग रेसा
प र	त ग ई	अ बऽ	सैं याऽ ऽऽ
×	२	०	३

अंतरा

प प	ध प प	सां सां	सां रें सां
सु घ	र ऽ च	तु र	तु म तो
×	२	०	३
सां सां	रें सां सां	गं पं	गं रें सां
स दा	ऽ रं ग	रं गी	ले ऽ ऽ
×	२	०	३
रें सां	^सां^ध - प	धधपप ग	पग रें सा [१०८]
मो ऽ	रे ऽ ऽ	सैंऽऽऽ ऽ	याऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

२.६ मारवा थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.६.१ राग : धन्यधैवत

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : मध्यम तथा निषाद स्वर

जाति : औडव-औडव

स्वर : रिषभ कोमल

वादी : ध

संवादी : रे

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा रे ग प ध सां। और सा ग प, गपध सांप गपसांध सां

अवरोह : सां ध प ग रे सा ।और सांध-- सांप, गपध- सांप, गपधप, रे रे सा

पकड़ : सा - सां ध - प, ग प ध सां प, ग प, रे, रे सा

विशेषता : इस राग को जैत का प्रातगेय जवाब भी मानते है | उत्तरांग में शुद्ध धैवत होने के कारण देशकार का आभास होता है परन्तु कोमल रिषभ होने के कारण यह देशकार से अलग पड़ता है ।[१०९] इस राग को सुनते समय देशकार तथा बिभास का मिलाजुला आभास होता है | इस राग में 'सां प' तथा 'ग प' की संगती का प्रयोग होता है | 'सा ध- - - सां प' तथा ' ग प ध प- ग - रे रे - सा यह राग वाचक स्वर संगतियाँ है | इस राग की रचना में ज.दे. पत्की की - 'रैन की जागी मैं तो न आये कन्हैया' (एकताल विलंबित) तथा 'आई बहार सखी फुलवन की' (त्रिताल), अती सुन्दर रचनाएँ है |[११०] इस राग के समीप के रागों में जयत है; जयत 'पध-

पसां, सां, रें, सां' इस स्वर समूह में स्पष्ट रूप से दिख पड़ता है तथा 'ध सां - ध प, गपधप' इस स्वरावली में देशकार दिख पड़ता है | पं. मधुसूदन पटवर्धन जी ने वादी-संवादी 'सा प' मानकर गायन समय शाम का बताया है |[१११]

स्वर विस्तार: सां ध़ प़, ग़ प़ ध ध़ प, ग़ प़ ध़-,ग़प़ ध़ध़ सा ।सा ध़ ध़ सा, सा ध़ प़, ग़ प़ ध़ - प़, ध़ ध़ प़, ग़ प़ ध़ - ग़ प़ -, ध़ सा | रेरेसाध़सा ध़ रे सा, रे सा ध़, ध़ ग रे सा | साध़सा - रेग, ध़सा-रे-रेसा- रेग, ध़सा- रे, रेसा-, रेग, रे सा, सारेग, रेग, रेरेसाध़सारेग-, रेग, प - ग, रेपग, पग, प ग रे सा | ध़सारेगप, सरेगप, रेगप, रेरे सा प - ग प, ध़सारेगप, प गप, गपधपग, साधपग, पधग, गपधग, रेग, प धध पग, परे, गपरे, परेरेसा | सा ध़ सारेगप सां ध, गपसांध धपगरेसासा, सां ध -, गपसांधध, धसां | रेंरेंसांधसां सांगं रेंसां, रेंगंरेंसां धसांरें गंरेंसां, गंधगंरेंसां, रेंसां ध - सांपं, गपध सांप, गपधपगरे, परे पगरे परे, रेसा |[११२]

राग : धन्यधैवत - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ध प ध सां	सां - - प	ग प गप धप	ग रे सा -
आ ऽ ई ब	हा ऽ ऽ र	स खी फूऽ ऽऽ	ल न की ऽ
सा सा ध -	ध सां ध प	ध प ध सां	ध प ध ध
न व प ऽ	ल्ल व न व	कु सु म सु	मं ऽ डि त
ध प ध सां	ध - प -	ग प गप धप	ग रे सा -
ब न ब न	शो ऽ भा ऽ	ऋ तु बऽ संऽ	ऽ त की ऽ
३	×	२	०

अंतरा

ग प ध प	सां - सां सां	सां - सां -	रें रें सां सां
स घ न घ	नी ऽ अ म	रा ऽ ई ऽ	सो ऽ ह त
सां ध ध सां	रें रें सां सां	ध प ध सां	ध प ध ध
ल ह र ल	ह र भ्र म	री ऽ ल ह	रा ऽ व त
सा ध ध प	ध सां ध प	ग प गप धप	ग रे सा -[११३]
उ मं ग न्या	ऽ री न्या री	स खी कऽलिऽ	य न की ऽ
३	×	२	०

२.६.२ राग : जयत (जैत अथवा जेत)

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : मध्यम तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ कोमल तथा बाकी स्वर शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा ग प ध प सां

अवरोह : सां प ध प ग रे सा

पकड़ : ध प ग, प ग रे सा, प़ ध़ प़ सा

विशेषता : इस राग को गाते समय विभास राग का भास होता है | परन्तु विभास में धैवत कोमल होने से तथा इस राग के आरोह में रिषभ दुर्बल होने से विभास से स्वाभाविक ही अलग हो जाता है | विभास की तरह इसके निकटवर्ती रागों में 'मालश्री' तथा 'धवलाश्री' भी है | इस राग में षडज-पंचम तथा पंचम-षडज की संगती ज्यादा ली जाती है | जयत को स्पष्ट करने के लिए षडज तथा पंचम स्वर बार-बार वक्र रूप से लिए जाते हैं | जैसे की 'सा प़ ध़ प़ सा', 'ग रे सा', 'सा प ग रे सा', 'प ध प सां', 'सा प ध - प', 'सा प ग रे सा'|[११४]

यह राग दो तीन प्रकार से गाया जाता है | प्रथम प्रकार में मध्यम तथा निषाद पूर्णतः वर्ज्य है | दुसरे प्रकार में थोड़ा सा तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है | तथा तीसरे प्रकार में दोनों धैवत का प्रयोग होता है |

हम यहाँ औडव प्रकार की चर्चा करेंगे, इस राग में 'सा ग' तथा 'सा प' स्वर संगतियाँ महत्वपूर्ण तो है ही इसके अलावा 'प ध ग' यह स्वर-विन्यास राग वाचक है | जैत-कल्याण नाम का भी एक राग है जो, इस राग से भिन्न है | वह कल्याण थाट का है |[११५]

साधारणत: म-नि वर्जित राग का आरोह-अवरोह 'सा रे ग प ध सां' तथा 'सां ध प ग रे सा' समझा जाता है | किन्तु जैत में 'सा रे ग' तथा 'प ध सां' ये दोनों ही क्रिया अमान्य है | जैत में आरोह 'सा ग प' तथा 'पधपप सां' इस तरह से जाता है | जैत में तार षड्ज तक पहुचँने के लिए 'गपप सां', एक ख़ास महत्वपूर्ण स्वरावली मानी गई है | आलाप तान का प्रारम्भ षडज, गंधार तथा पंचम से करना चाहिए | पंचम तथा षडज़ पर न्यास तथा अपन्यास रहता है | यह राग जैत, जयन्त, जयत इत्यादि नामों से पहचाना जाता है | परन्तु जयन्तमल्हार में जो जयन्त शब्द है उसका तात्पर्य जयजयवंती से है | जैतकल्याण, जैतश्री, जैतकली जैसे जैत मिश्रित राग स्वरुप देखनेको मिलते हैं | जैत तथा जैतकल्याण ये दोनों अलग राग है| दोनों रागों में 'सा ग प प ध प सां' इस प्रकार 'सा ग' तथा 'प सां' की संगती से आरोह किया जाता है | अवरोह करते समय भी 'सां प ध प ग प ध प ग रे सा' इस प्रकार अवरोह होता है | फर्क इतना है की जैत में रिषभ कोमल है; तथा मारवा थाट जन्य है | उसी प्रकार जैतकल्याण में रिषभ शुद्ध है तथा यह कल्याण थाट जन्य है |[११६]

स्वर विस्तार : सा, प़ध़प़प़ सा, साग रेसा, सासा ग, ^{प}ग^{प}ग प-, पग, प ग रे सा | सा ग - रे सा, प़ प़ध़प़प़ सा - | सा ग - रे सा, सा प़ ध़ प़ सा रे सा, सा ग - रे सा, सा ग - रे सा, सा पग प ग रे सा, सा ग प धपप

ग - रे सा | सारेसासा पधपप प ग , गपप सां पधप प - ग, सा साप
ग - रे सा | सा साग ग गप, पधपग, पध प सां - पधप-ग, पग -रेसा |
पधपप पसां रेंसां, धप गपप सां रेंसां, पधपप ग, सा [प]ग प, प ग - रेसा |
सागपधपप सांसां रेंसां, सांगं रेंसां, सांरें सांसां [सां]पधप, [प]गपगरे सा, सारेसासा
ग पधपप सां, सांरेंसांसां सांगं रेंसां, सांपग, सागप ध पग, पग रेसा |[११७]

राग : जयत - विलंबित एकताल

स्थायी: लंगरवा ढ़ीठ हो मोसो कहत है अनोखी बात।

अंतरा: छाड़ और मग मेरो ही आवत और सखा ले साथ॥

स्थायी

‚ध पप ग - रे- सारे सा	सा -	साप धप	पसा सारेसासा	साग [प]गप
‚लं ऽऽ ग ऽ ऽऽ ऽऽ र	वा ऽ	ढ़ीऽ ऽठ	होऽ ऽऽऽऽ	मोऽ सोऽ
४	×	०	२	०

प पधप प प -	पसां– प	पधपपप ग	[ग]सा पग	[प]गप ‚गप धप -
क ऽऽऽ ह ऽ ऽ	तऽऽऽ ऽ	हैऽऽऽऽ ऽ	अ नोऽ	ऽऽ खीऽ ऽऽ ऽ
३	४	×	०	२

ग रेसा	साग गप
बा ऽऽ	तऽ ऽऽ
०	३

अंतरा

प - [प]सां सां सां - रें सां	सां -	सांगं- रें--सां	सांरेंसांसां सां
छाऽ ड़ औ र ऽ म ऽ	ग ऽ	मेऽऽऽ रोऽऽऽ	हीऽऽऽ आ
४	×	०	२

प ग	प पधपप- -	ग रेसा	साग गप	पधपप [प]सांप	ग प-पध प
ऽ ऽ	ऽ वऽऽऽऽ ऽ	त ऽऽ	औऽ रऽ	सऽऽऽ खाऽ	ले ऽऽऽऽ ऽ
०	३	४	×	०	२

ग रेसा	सागप ध ग - प ११८
सा ऽऽ	थऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३

राग : जयत(जैत) - त्रिताल (द्रुत)

स्थायी: पिया बिन रह्यो न जाय सखीरी, पिया बिन रह्यो न जाय| घड़ी-घड़ी पल छीन निस दिन रट लागी रहे|

अंतरा: औरन के बस भये बालमुवा, मोसे कबहुँ नहीं पूछत बतिया, रतिया रहत उत कैसे कहू सहेली अब|

स्थायी

ध प ग रे	सा सा रे सा	सा - सा सा	सा ग प ध
पि या बि न	र ह्यो ऽ न	जा ऽ ऽ य	स खी री ऽ
०	३	×	२
ध प ग रे	सा सा रे सा	सा - सा सा	सा सा ग ग
पि या बि न	र ह्यो ऽ न	जा ऽ ऽ य	घ ड़ी घ ड़ी
०	३	×	२
प प ध प	सां सां पध प	ग प ग रे	सा सा ग पध
प ल छी न	नि स दिऽ न	र ट ला ऽ	गी र हे ऽऽ
०	३	×	२

अंतरा

प - ध प	सां - सां सां	रें सां - सां	गं रें सां -
औ ऽ र न	के ऽ ब स	भ ये ऽ बा	ल मु वा ऽ
×	२	०	३
सां रें सांसां रेंसां	प - ध प	ग प ध प	ग रे सा -
मो से कऽ बऽ	हुँ ऽ न हीं	पू ऽ छ त	ब ति या ऽ
×	२	०	३
सा सा ग ग	प प पध प	सां प ध प	ग - - प
र ति या र	ह त उऽ त	कै से ऽ क	हू ऽ ऽ स
×	२	०	३
ग रे सा सा	ग- गप गप ध- ११९		
हे ऽ ली अ	बऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ		

२.६.३ राग : मृगनयनी

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : पंचम और निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ कोमल तथा दोनों मध्यम स्वर

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्री का अन्तिम प्रहर

आरोह : सा रे॒ ग म, म॑ म ग, म॑ ध सां

अवरोह : सां ध, म॑ ध, म॑ म ग, रे॒ ग रे॒ सा

पकड़ : रे॒ ग रे॒ सा, रे॒ ग म, सां ध, म॑ ध, म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा

विशेषता : ऐसा प्रतीत होता है की मारवा थाट जन्य ललित राग में निषाद स्वर वर्ज्य किया गया है |

स्वर विस्तार : सा रे॒ ग म, म॑ म ग, म॑ ध म॑ ध सां, सां ध, म॑ ध म॑ म ग, रे॒ ग रे॒ ग म, म॑ म ग, ग म रे॒ ग म, म॑ ग रे॒ सा ।

म॑ ध म॑ ध सां, गग म॑ ध सां, म॑ ध म॑ सां, ध सां रें॒ सां, रें॒ गं रें॒ मं, गं मं, मं॑ मं गं, रें॒ सां, ध सां रें॒ सां, रें॒ सां ध, म॑ ध, सां ध, म॑ध म॑ध म॑ म ग,ग रे॒ ग म, म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा|[१२०]

वैसे पंडित विश्वमोहन भट्ट जी 'मृगनयनी' नामक जो राग बजाते है; उसे उन्होंने चन्द्रकौन्स तथा मालकौन्स का संयोगित स्वरुप बताया है; वैसे

'चंद्रमौलि' नाम का एक राग है; जिसके आरोह में चंद्रकौंस तथा अवरोह में मालकौंस है; अर्थात चंद्रकौंस तथा मालकौंस का मिश्रित रूप है | चंद्रमौलि में रिषभ-पंचम यह दोनों स्वर वर्ज है; जिसका राग स्वरुप कुछ इस प्रकार है - सा, ऩि सा, ग सा, ऩि ग सा, सा ग म , ध म, ध नि ध म, ग म ध नि सां, गं सां, मं गं सां, नि सां ध नि ध म, नि ध म, ध म, ग म ग सा | जो इस प्रस्तुत 'मृगनयनी' राग के स्वरुप से भिन्न है, जिसका वर्णन संगीताचार्य श. अ. टेंकशे जी ने किया है |[121] उसी प्रकार डॉ. मधुसूदन पटवर्धन जी ने भी चंद्रमौली नामक राग का वर्णन किया है; जिसे भैरव थाट से षाडव जाति का राग बताकर आरोह-अवरोह स्वरुप 'सा रे ग म ध नि सां- सां नि ध म ग रे सा', इस प्रकार बताया है, जिसे भैरव तथा चंद्रकंस का संयोगिक रूप बताया हैं, जो प्रस्तुत राग से भिन्न है |

राग : मृगनयनी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : सोहनी सूरत मोरे मन बस गई, अजहूँ न आये श्याम कन्हाई |
अंतरा : निसदिन तरसत नैन सखी, इत उत ढूँढ़त दिनरैन गवाँई |

स्थायी

सा रे॒ ग म	म॑ म ग ग	म॑ ध सां सां	सां ध म॑ म
सो ह नी सू	र त मो रे॒	म न ब स	ग ऽ ई ऽ
०	३	×	२
ग रे॒ ग म॑	ग रे॒ सा -	म - म म	गम म॑म गरे॒ सा
अ ज हूँ न	आ ऽ ये ऽ	श्या ऽ म क	न्हाऽ ऽऽ ईऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म॑ ध सां सां	सां रें॒ सां -	सां रें॒ गं मं॑	गं रें॒ सां -
नि स दि न	त र स ऽ	त नै न ऽ	स खी ऽ ऽ
०	३	×	२
गं रें॒ सां ध	म॑ ध म॑ म	ग रे॒ ग म॑	ग रे॒ सा -[१२२]
इ त उ त	ढूँ ऽ ढ़ त	दि न रै न	ग वाँ ई ऽ
०	३	×	२

२.७ काफ़ी थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.७.१ राग : पदमावती

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा धैवत वर्ज्य

जाति : औडव-औडव

स्वर : निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वादी : मध्यम

संवादी : तार षड्ज़

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहार

आरोह : सारेसाम, मप, पनि॒-प, नि॒मप, सां

अवरोह : सां- पनि॒- प, मपम, सारे-सा

पकड़ : नि॒ मप सां, पनि॒- प, मपम, सारे-सा

विशेषता : यह एक वक्र राग है । पद्मावती राग का उठान केदार की भांति 'सारे, साम, मप, मपम, सरे-सा' इस तरह किया जाता है । जिससे केदार अंग स्पष्ट दिखाई देता है । परन्तु केदार में धैवत का प्रयोग होता है । जो पदमावती राग में बिल्कुल वर्ज्य है। उसी प्रकार इस राग में शुद्ध निषाद भी नहीं है । इन सब बातों से यह राग केदार से भिन्न दिखाई देता है । 'नि॒ - प [प]नि॒ मप सां - प नि॒ प' इस स्वरावली में राग नायकी दिखाई देता है । परन्तु कोमल गंधार इस राग में न होने से नायकी से भी भिन्न हो जाता है । संक्षिप्त में यह कहना उचित होगा की सारंग के स्वरों को पूर्वांग में केदार की तरह तथा उत्तरांग में नायकी दिखाने से पद्मावती की रचना होती है । वैसे मधमाद सारंग तथा पद्मावती के स्वर एक सामान

होते हुवे भी चलन भेद एवं वादी-संवादी भेद के कारण दोनों एक दुसरे से अलग है | मधमाद सारंग में सारंग अंग की प्रधानता है | जबकि पद्मावती में केदार छायांकित है |

स्वर विस्तार: सा, नि़, नि़सा। सा, प़नि़प़, नि़प़, म़प़नि़प़, नि़म़प़ सा। सारे सा, रे नि़सा, प़नि़-प़, रे सा रे नि़सा, प़नि़प़, प़नि़म़प़ सा। सरे-सा, सरे साम -, म- म सारे सा, सारेसा म- मम प, मप, मपम- सारे-सा। सारेसा म-मप-, सासा म-, मप, मप, निप, मनिप, निमप, निप-म, म-सारे-सा। साम, मप,मपनिप, मनिप,निमप सां, पनिप, निनिप मनिप, मपसां, पनिप, मपनिप, सां, सां रें सां, मं - रें सां, सांरेंसांसां, पनिप, नीनिपमपनिनिपम, मनिप, निपम, म सारे-सा।[१२३]

सा, नि़ सा, प़ नि़ प़ सा (नायकी); सा रे सा, सा रे सा म, रे सा (केदार); म प नि प, म नि प, नि म प सां, प नि प, (नायकी); म रे सा, सा रे सा म, सा रे सा (केदार); म प नि म प सां (नायकी); रें सां, सां रें सां मं, रें सां (केदार); सां, नि प, म प नि प, सां नि प, प नि प (नायकी); म प म, रे सा, सा रे सा, म, रे सा (केदार) |[१२४]

राग : पदमावती - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बाजे झनन-झनन मोरी पायलिया, कैसे आऊँ पिया तोरे मन्दिरवा।

अंतरा : सास ननदिया जागे जेठनिया, करदेगी सब बैन ये पैजनिया।

स्थायी

नि॒ म प	सां सां प नि॒	प प म प	म - सा रे
बा ऽ जे	झ न न झ	न न मो री	पा ऽ य लि
३	×	२	०
सा सा - सा	म - म -	प प नि॒ प	म म सा रे
या कै ऽ से	आ ऽ ऊँ ऽ	पि या तो रे	म ऽ न्दि र
३	×	२	०
सा नि॒ म प			
वा बा ऽ जे			
३			

अंतरा

(मप) नि॒ प	सां सां सां -	सां सां सां -	प नि॒ प -
(साऽ) स न	न दि या ऽ	जा गे जे ऽ	ठ नि॒ या ऽ
३	×	२	०
- सां रें सां	मं - सां रें	सां - नि॒ प	म म सा रे
ऽ क र दे	गी ऽ स ब	बै ऽ न ये	पै ऽ ज नि
३	×	२	०
सा नि॒ म प	१२५		
या बा ऽ जे			
३			

२.८ आसावरी थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.८.१ राग : कोकिल पंचम

थाट : आसावरी

वर्ज्य स्वर : रिषभ और निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : गंधार तथा धैवत स्वर कोमल है

वादी : ध॒

संवादी : ग॒

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा ग॒ म प ध॒ सां

अवरोह : सां ध॒ प म ग॒ सा। अथवा सां - ध॒ प, म प ध॒, म प, ग॒,म ग॒ - - सा, ध़॒ ध़॒ सा

पकड़ : सा ग॒ म प, ध॒, प, म प ध॒, सां, ध॒ प, म प ध॒ म प, ग॒ म ग॒ सा

विशेषता : धैवत का आन्दोलन एवम निषाद न होने से उत्तरांग में आसावरी की छाया दिखाई देती है। परन्तु रिषभ के अभाव के कारन यह आसावरी से अलग हो जाता है । "साग॒मग॒-सा" इस स्वरवाली में मालकौन्स दिखता है । परन्तु "ग॒मपध॒ - प" इस प्रकार पंचम का प्रयोग तथा आंदोलित धैवत से मालकौंस दूर हो जाता है ।[१२६] कुछ गुनिजन इस राग का ठाठ भैरवी तथा वादी-संवादी 'प सा' भी मानते है | इस राग के समीप के रागों में कौशि कान्हड़ा तथा पंचम मालकौंस है | असावरी ठाठ के कौशि कान्हड़ा में आरोह-अवरोह दोनों में निषाद लिया जाता है तथा रिषभ का प्रयोग

अवरोह में किया जाता है | उसी तरह पंचम मालकौंस में निषाद का प्रयोग आरोह-अवरोह में किया जाता है तथा आरोह में पंचम नहीं लीया जाता है|[१२७]

स्वर विस्तार : ध़ ध़ सा, सा ग सा, सा ग म प , ग म प ध , ध, ध प म , प म ग म ग म ग सा, सा ग म प, ग म प ध, ध प, म प ध म प, ग म ग सा |

ग म प ध, सां म प ध, सां, म प ध, सां गं सां, ध सां मं गं सां, ध सां गं सां, ध धसां धसां गं सां, ध सां ध सां ध प, प ध म प , ध सां ध , प, ध ध प म प म ग, ग म, सा ग सा, ध ध प ध म प ग, ग म, ध प , ध प, ध म प, म प ध म प ग, ग म ग सा ।[१२८]

राग : कोकिल पंचम - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

साग मप ध प	ध म प सां	ध ध प म	गम पम गम गसा
मोऽ ऽऽ रे पि	या ऽ को ऽ	म ना ओ ऽ	सऽ खिऽ याँऽ ऽऽ
ध़ ध़ सा सा	ग म प -	ध ध सां -	धप मप गम गसा
चु न चु न	ला ऽ ओ ऽ	फू लों की ऽ	कऽ लिऽ याँऽ ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ध प ध म	ग म प ध	सां - सां सां	गं मं गं सां
जो ऽ पि या	आ ऽ ये ऽ	मो ऽ री न	ग रि या ऽ
सां गं सां सां	ध प म ग	सा ग म प	धसां धप मग सा-[१२९]
प्रे ऽ म से	धो ऽ ऊँ ऽ	च र ण की	तऽ लिऽ याऽ ऽऽ
०	३	×	२

२.८.२ राग : शोभावरी

थाट : आसावरी

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा निषाद स्वर

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत कोमल

वादी : ध

संवादी : रे

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा रे म प, सां ध-सां ।सा रे म प ध प, म प ध ध सां

अवरोह : सां ध प म रे- सा । सां ध प, ध म प, [म]रे [म]रे सा

पकड़ : रे म प सां, ध-प, मपध, मप, म रे, सा

विशेषता : यह एक दक्षिणात्य अत्यंत मधुर प्रकार है । इस में आसावरी के ही स्वर हैं । इसे औड़व आसावरी भी कहते हैं । पूर्वांग में सारंग का भास होता है |[१३०] राग आसावरी में ही गंधार निषाद वर्जित करने से इस राग की उत्पत्ति होती है | कोमल धैवत लगाते वक्त इस राग में धैवत को कोमल निषाद का कण लगता है | इस राग को 'शुद्ध गुणकली' भी कहते हैं |[१३१]

स्वर विस्तार: सा ध़-प़, म़प़ ध़ - म़प़ ध़ - सा | ध़ सा, प़ ध़ सा, रे ध़ सा, ध़ सा रे-सा, म रे सा । म़प़ ध़ सा , सा, रेमप रेमप मपधमप, रेमपध, धमप, रे, मरे, पमरे, रेसा | सा रेमपध, मपध, मपध सां --, रेंसां [रें]मं, रें सां, रेंधप, मपसांध प, म प ध प, म प ध सां ध म प, रे म प,

मपधपधपमप धधप मप मरे रे सा। सा रे म प ध म प, म प ध सां, रें सां - ध म, ध प, प ध म प, रे म प, म, रे सा |[132]

राग : शोभावारी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

रे म प प	ध - ध प	-प ध म प	रे म रे सा
प्री ऽ त म	जा ऽ वो ऽ	ऽअ ब न स	ता ऽ वो ऽ
सा सारे ध ध	सा - सा -	रे म प प	ध ध म प
रै ऽऽ न अँ	धे ऽ री ऽ	जु ग सी ऽ	बी ऽ त त
३	x	२	०

अन्तरा

म प ध ध	सां - सां सां	सां रें रें सां	ध - प म
भो ऽ र भ	ई ऽ नी त	कि त सो ऽ	आ ऽ ये ऽ
ध रें सां रें	सां - ध पध	ध - म म	प रे म -
जा नु कि त	रै ऽ न बिऽ	ता ऽ ई मा	ऽ ई री ऽ[133]
३	x	२	०

राग : शोभावारी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

			सा
			ए
रे म - प	ध॒ - प प	(म)रे (म)रे सा सा	(म)रे - म म
री आ ऽ ली	आ ऽ ऽ ज	शु भ दि न	गा ऽ व हुं
प - ध॒ म	ध॒ - - प	ध॒ - ध॒ ध॒	सां - सां -
मं ऽ ग ल	चा ऽ ऽ र	चौ ऽ क पु	रा ऽ वो ऽ
रें रें - सां	रें ध॒ - प	ध॒ प म प	प सां - सां
मृ दं ऽ ग	ब जा ऽ वो	रि झा ऽ वो	बं धा ऽ वो
सां - ध॒ प	ध॒ - म प	मप ध॒ पम प	रे म - सा
बां ऽ धो ऽ	वं ऽ द न	बाऽ ऽ ऽऽ ऽ	र ऽ ऽ ए
३	×	२	०

अंतरा

म म प -	ध॒ - ध॒ सां	- सां सां -	रें मं रें सां
गु णी गं ऽ	ध ऽ र्व अ	ऽ प्स रा ऽ	कि ऽ न्न र
, रें सां रें	ध॒ - प ध॒	म प मप ध॒	पम प रेम सा [१३४]
, बी न र	बा ऽ ब ब	जे ऽ कऽ र	ताऽ ऽ रऽ ए
३	×	२	०

२.९ तोड़ी थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.९.१ राग : सुहानी तोड़ी

थाट : तोड़ी

वर्ज्य स्वर : रिषभ और निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : गंधार तथा धैवत कोमल तथा मध्यम स्वर तीव्र

वादी : ध॒

संवादी : ग॒

गायन समय : दिन का दूसरा प्रहर

आरोह : सा ग॒ म॑ प ध॒ सां

अवरोह : सां ध॒ प म॑ ग॒ सा

पकड़ : ध॒ प , ग॒ म॑ प ध॒ प, ध॒ म॑ ग॒ सा

विशेषता : यह एक तोड़ी थाट का मधुर एवं अप्रकाशित राग-प्रकार है | इस राग की रचना तोड़ी राग में रिषभ तथा निषाद स्वर को वर्ज्य करने से हुई है । सारा चलन तोड़ी जैसा ही है |

चलन : ध॒ प - -, ग॒ म॑ प ध॒ - - ध॒, म॑ - - प ध॒ - - - ग॒, प म॑ ध॒ - - ग॒, म॑ ध॒ - - प -, प ध॒ सां ध॒ - - प, म॑ ध॒ म॑ ग॒ सा ध़॒ सा[१३५]

राग: सुहानी तोड़ी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : रमता जोगी आये, भोर भई कोई रांझन अलख जगाये ।

अन्तरा : उस जोगी का रूप निराला, 'सबरंग' बिरहन हीर को कौन बताये ।

स्थायी

			ग॒
			र
सा ध॒ - सा	ध॒ - प -	- - म॑ ध॒	म॑ ग॒ सा ग॒
म्ता जो ऽ गी	आ ऽ ये ऽ	ऽ ऽ आ ऽ	ये ऽ ऽ र
३	x	२	०
सा ध॒ - सा	ध॒ - प -	प - - -	प - ध॒ प
म्ता जो ऽ गी	आ ऽ ये ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	भो ऽ र भ
३	x	२	०
ध॒ सां -गं॒ सां	ध॒ - प प	प प ग॒ म॑	ध॒ म॑ ग॒ ग॒
इ ऽ ऽको ई	रां ऽ झ न	अ ल ख ज	ऽ गा ये र

अन्तरा

गं॒ सां ध॒ सां	ध॒ प म॑ग॒ ध॒	सां - सांगं॒ सां	ध॒ - प -
उ स जो ऽ	गी ऽ ऽऽ का	रु ऽ पऽ नि	रा ऽ ला ऽ
०	३	x	२
सा ग॒ म॑ प	ध॒ सां सांगं॒ सां	ध॒ - प प	प म॑ प ध॒[136]
स ब रं ग	बी र हऽ न	ही ऽ र को	कौ ऽ न ब

२.९.२ राग : फिरोजखानी तोड़ी / छाया तोड़ी / औड़व तोड़ी

थाट : तोड़ी

वर्ज्य स्वर : पंचम और निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ, गंधार तथा धैवत कोमल तथा मध्यम स्वर तीव्र

वादी : ध

संवादी : ग

गायन समय : दिन का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे ग म॑ ध सां

अवरोह : सां ध म॑ ग रे ग रे सा

पकड़ : सा रे ग म॑ ध, ध म॑ ध म॑ ग रे ग सा, ध ध सा

विशेषता : यह तोड़ी थाट का एक मधुर अप्रचलित राग है | ऐसा प्रतीत होता है की तोड़ी राग में पंचम तथा निषाद स्वर को वर्ज्य करने से इस राग की रचना हुई है । इस राग का चलन तोड़ी के समान है |[१३७] इस राग का अविष्कार फिरोजखाँ नामक एक संगीतज्ञ नें किया | इस राग को 'छायातोड़ी' भी कहते हैं | छायातोड़ी नाम से ऐसा प्रतीत होता है की शायद छाया तथा तोड़ी यह दोनों रागों के मिश्रण से बना हो परन्तु ऐसा नहीं है| इस राग प्रकार में राग तोड़ी की ही छाया अधिक होने के कारण इस रागस्वरूप को 'छायातोड़ी' नाम दिया गया हो | इसे औड़वतोड़ी भी कहते है|[१३८]

राग : फिरोजखानी तोड़ी - एकताल (मध्यलय)

स्थायी

, मध	म॑,ध सांध	गम॑ ग,म॑	धम॑ रेग	रे,ग (म॑)रेग	(म॑)रे सा
, ऽदीऽ	म,दी ऽम	दीऽ म,दी	ऽम दीऽ	म,दी ऽम	दे रे
रे ऽ	ग म॑	ध रें	ग म॑	सा रे	ग रे
ना ,	त न	न, त	न न,	त न	दे रे
सा ऽ	ध़ ध़	ध़ सा	सा सा	सा रे	ग म॑
ना ,	नि द्रो	म् द्रो	म् त	न न	दे रे
गरे ऽ	ग -	ध -	रें -	सां सां	सां सां
ना ,	ता ऽ	दा ऽ	रे ऽ	त न	त न
ध ध	(ध)म॑ म॑	(ध)म॑ म॑	ग -	(ग)रे रे	(ग)रे रे
दी म्	त न	त न	दी म्	त न	त न
×	०	२	०	३	४

अंतरा

ध म॑	ध (ध)ग	- म॑	ध ध	सां रें	रें सां
ना दिर	दिर दा	ऽ नि	त न	त दा	ऽ नि
सां रें	(गं)रें रें	सां, सां	- रें	सां सां	ध ध
त न	दे रे	ना, ता	ऽ रे,	त द्रे	दा नी
ध ,	सां सां	सां रें	सां सां	सां सां	सांसां रेंरें
धिं ,	धा किट	तक धुम	किट तक	धि त्ता	गदी गन
सां ,	ध ध	(सां)म॑म॑ म॑म॑	(म॑)ग ,	रे रे	गम॑ रेग
धा ,	धि ता	गदी गन	धा ,	धि ता	गदी गन [१३९]
सा					
धा					
×	०	२	०	३	४

२.९.३ राग : भूपाल तोड़ी

थाट : तोड़ी

वर्ज्य स्वर : मध्यम और निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ, गंधार तथा धैवत कोमल

वादी : ध

संवादी : ग

गायन समय : दिन का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे ग प ध सां

अवरोह : सां ध प ग रे ग रे सा

पकड़ : ध, प , ग प, रे, ग, रे, सा, ध सा

विशेषता : यह तोड़ी थाट का एक अप्रचलित राग है | इस राग की रचना भी तोड़ी राग में तीव्र मध्यम तथा निषाद वर्ज्य करने से हुई है | इस राग के सारे नियम तोड़ी के ही है; मतलब की वादी-संवादी, चलन इत्यादि | फ़क्त इसमें मध्यम तथा निषाद वर्ज्य है | उत्तरांग प्रधान राग है|[१४०] राग तोड़ी की तरह ही इसका भी गायन समय दिन का दूसरा प्रहार रखना उचित है | 'परेग' की सगति इस राग में दृष्टिगोचर होती है | यह एक आलाप प्रधान राग होने से विलंबित गति में अधिक स्पष्ट होता है|[१४१] 'भूपाल तोड़ी' इस नाम से एसा प्रतीत होता है की भूपाली राग तथा तोड़ी राग का मिश्रित रूप हो परन्तु ऐसा बिलकुल नहीं है | राग भूपाली के सारे स्वर कोमल करके राग का चलन तोड़ी के जैसे ही रखने से इस राग का

आविर्भाव होता है |[१४२] कई गुणी इसका गायन समय सुबह का मानते है; प. विष्णुनारायण भातखंडे जी ने ‘क्रमिक पुस्तक-मालिका छठी पुस्तक’ के अंतर्गत इस राग का गायन समय प्रातःकाल तथा ठाठ भैरवी माना है |

राग भूपाल तोड़ी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : उनसों हमरी जाय कहियो, बिपता वीर पथिकवा |

अंतरा : कर जोड़ राम-राम कहियो, तो पाछे कहियो हमरी बात बतावो जी ‘इनायत प्यारा’ ||

स्थायी

, ग रे सा	रे ध़ सा रे	ग - - ग	(ग)रे ग रे सा
, उ न सों	ह म री ऽ	जा ऽ ऽ य	क हि यो ऽ
, ग रे ग	प - ध सां	ध - - रे	ग रे सा -
, बि प ता	ऽ ऽ वी ऽ	र ऽ ऽ प	थि क वा ऽ
०	३	×	२

अंतरा

सा रे ग प	ध सां - रें	सां - - सां	ध रें सां -
क र जो ऽ	ड़ रा ऽ म	रा ऽ ऽ म	क हि यो ऽ
ध - ध -	सां - (ध)सां सां	रें गं रें सां	सां (सां)ध - ध
तो ऽ पा ऽ	छे ऽ क हि	यो ऽ ह म	री बा ऽ त
ध ध गं रें	सां - - (ध)सां	सां रें सां ध	रे ग रे सा[१४३]
ब ता ऽ वो	जी ऽ ऽ इ	ना ऽ य त	प्या ऽ रा ऽ
०	३	×	२

२.१० मिश्र थाट के औडव-औडव जाति के राग |

२.१०.१ राग : अमीरखानी कौंस / अमरप्रिया

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा धैवत स्वर वर्ज्य

जाति : औडव

स्वर : मध्यम स्वर तीव्र तथा कोमल निषाद

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : दिन का दूसरा प्रहर

आरोह : सा, ग मं प नि॒ सां

अवरोह : सां नि॒ प मं ग सा

पकड़ : नि॒सा ग-मं-पमंग, नि॒सा

विशेषता : यह एक अप्रकाशित नव राग है | मधुकौंस के समीप का राग है । राग मधुकौंस में गंधार कोमल है । इसके विपरीत इस राग में गंधार शुद्ध है; मतलब की मधुकौंस राग में गंधार शुद्ध करने से इस राग की रचना हुई है । इस राग में १) पगमं २) मंनि॒प ३) नि॒मंप ४) सांनि॒प ५) नि॒पमंग ६) मंगसा, इत्यादि संगतियाँ दृष्टिगोचर होती रहती है |

स्वर विस्तार: प़नि॒सागग, ग, प़नि॒साग मं - मंपमंग, गनि॒सा, मं़प़नि॒ - सा। प़नि॒-सा नि॒ प़, मं़प़नि॒साग मं-ग- नि॒ग - सा। मं़प़नि॒सा^ग^मं- नि॒ - मं - नि॒ग - सा, मं-पगमं-पमं-ग - सा। प़नि॒साग मं---नि॒मं- - ग - नि॒सा, सागमंप, नि॒मं–नि॒नि॒मं - ग सा नि॒ - साग - मं - ग - सा। सागमं -- गनि॒ - मं - नि॒-ग- नि॒साग-, गगमंपनि॒नि॒पमं–पग–नि॒सा,

नि॒प़नि॒सागम॑–नि॒म॑-गनि॒ सा। सागम॑पनि॒ - सांनि॒ - प म॑प-ग-नि॒-सा, सागम॑प- ग - नि॒सागम॑पग -नि॒सा ग-म॑-पम॑ग, नि॒सा, सागम॑पनि॒ -पनि॒-पम॑ग-म॑-ग-सा, म॑ग-म॑-प-नि॒-म॑पनि॒, पम॑पनि॒-,पनि॒-म॑प-,गम॑-नि॒सा। नि॒-नि॒-म॑प -म॑ग-सा, सागम॑प नि॒ नि॒ -म॑प- ग- नि॒सा। प़नि॒सागम॑ - प - नि॒ - सां नि॒ प - नि॒म॑प - म॑ग- नि॒सा।[144]

राग : अमीरखानी कौंस / अमरप्रिया

स्थायी : पार करो तुम नाव मोरी, हम मुरख तुम चतुर खेवैया।
अंतरा : हूँ अवगुण मोमे कछु गुण नाही, तुमरे शरण अब लीणो विश्राम।।

स्थायी

सा ग म॑ प	म॑ग - नि॒ प़	नि॒ - सा सा	साग म॑प ग -
पा ऽ र क	रो ऽ तु म	ना ऽ व ऽ	मोऽ ऽऽ री ऽ
०	३	×	२
प़ नि॒ सा ग	म॑ म॑ प प	प नि॒ नि॒ सां	नि॒ प म॑प ग
ह म मु ऽ	र ख तु म	च तु र खे	वै ऽ ऽऽ या
०	३	×	२

अंतरा

ग - म॑ प	नि॒ सां सां सां	नि॒ नि॒ सां सां	नि॒ सां सां -
हूँ ऽ अ व	गु ण मो मे	क छु गु ण	ना ऽ ही ऽ
०	३	×	२
पनि॒ नि॒ सां गं	सां सां सां सां	नि॒ - प म॑प	म॑ग ग म॑नि॒ सा[145]
तु म रे श	र ण अ ब	ली ऽ नो विऽ	श्रा ऽ ऽ म
०	३	×	२

२.१०.२ राग : अमृतवर्षिणी

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा धैवत स्वर वर्ज्य

जाति : औडव

स्वर : मध्यम स्वर तीव्र

वादी : ग

संवादी : नि

गायन समय : रात्री का प्रथम प्रहर

आरोह : सा, ग मं प नि सां

अवरोह : सां नि प मं ग सा

पकड़ : गमंपनि-पमंग, साप-मंग, मंगसानि़

विशेषता : यह कर्नाटक संगीत का राग है | आजकल उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत में गायक-वादकों में बड़ा प्रिय हुवा है | 'सागमंप मंप गमंग' इस स्वरावली में मारुबिहाग दिखाई देता है | 'अमीरखानी कौंस' में निषाद कोमल है तथा अमृतवर्षिणी में निषाद शुद्ध है |[१४६]

राग : अमृतवर्षिणी - एकताल (मध्यलय)

स्थायी : का संग किन्ही प्रीत ऐसी रीत पियाके समझावत बाज़ू भर आई|

अंतरा : हमसे जुग भइलवा सजनी बिरहा सतावे, ऐसी रीत पिया के समझावत बाजु भर आई ||

स्थायी

सां	-	-	नि	-	प	मं	-	प	मं	-	ग
का	ऽ	ऽ	सां	ऽ	ग	कि	ऽ	न्ही	प्री	ऽ	त
ग	-	मं	ग	मं	सा	नि़	सा	ग	सा	ग	मं
ऐ	ऽ	सी	री	ऽ	त	पि	या	के	स	म	झा
ग	मं	प	पमं	गमं	पनि	सां	नि	मं	प	ग	मं
ऽ	व	त	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जु	भ	र	आ	ई
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

ग	मं	प	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां	-	नि
ह	म	से	जु	ऽ	ग	भ	इ	ल	वा	ऽ	स
सां	नि	प	मं	प	मं	-	प	मं	ग	मं	ग
ज	नी	ऽ	बि	र	हा	ऽ	स	ऽ	ऽ	ता	वे
ग	-	मं	ग	मं	सा	नि़	सा	ग	सा	ग	मं
ऐ	ऽ	सी	री	ऽ	त	पि	या	के	स	म	झा
ग	मं	प	पमं	गमं	पनी	सां	नि	मं	प	ग	मं १४७
ऽ	व	त	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जू	भ	र	आ	ई
×		०		२		०		३		४	

२.१०.३ राग : देवांगिनी

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : पंचम तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : ऋषभ तथा गंधार कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्री। अथवा प्रात:काल

आरोह : सा रे ग म ध सां

अवरोह : सां ध म ग रे सा

पकड़ : म, ध म, ग रे, ग रे सा

विशेषता : यह एक सुमधुर अप्रचलित नया राग है | राग अभोगी में रिषभ शुद्ध है; जबकि इसमें रिषभ कोमल है | राग अभोगी में शुद्ध रिषभ के स्थान पर कोमल रिषभ लगाने से इस राग के स्वर सामने आते हैं |[१४८] इस राग की उत्पत्ति पूर्वांग में भैरवी तथा उत्तरांग में अभोगी के मिश्रण से हुई है; जैसे - सा, ध़ सा, म ध़ सा, (अभोगी), सा रे सा, रे ग म, रे ग रे सा (भैरवी), सा रे ग म (भैरवी), म ध सां, ध सां (अभोगी), सां रें गं रें सां (भैरवी), सां ध म, ध सां ध म (अभोगी), म ग रे ग रे सा | यह एक शांत रस प्रधान प्रकृतिका राग है | इस राग के प्रचार में पं. यशवन्तदेव का बड़ा योगदान रहा है | पुरुषोत्तम दारव्हेकर नाटककार जो नागपुर आकाशवाणी पर मराठी नाटक विभाग संभालते थे; वहाँ पर ही आकाशवाणी

में संगीत विभाग पं. यशवंत देव जी संभालते थे | उस समय पुरुषोत्तम दारव्हेकर जी के एक नाटक के अंतर्गत एक नये रागकी रचना करनी थी तब पं. यशवंत देव जी जो सुगम संगीतकार थे, उन्हों ने 'देवांगिनी' नामक इस राग की रचना की थी |

स्वर विस्तार : ध़ सा रे- - , रे-, सा- -, ध़ ध़ सा रे सा - -, सा रे - - रे - -, रे ग - - रे- -, ग म रे- ग- रे -, सा रे ग -, रे ग रे - सा,सा रे ग म- - रे ग -, रे ग रे - सा, ध़ रे - - सा -| गम - - ग -, ग म ध - - म -, ग म ध - म - रे ग म - रे ग रे सा ध़ ध़ रे - सा |[१४९]

राग : देवांगिनी - (द्रुत त्रिताल)

स्थायी: सब गुणीजन मिल गावो बजावो, अपने मन को आप रिझावो|
अंतरा: शुभ घड़ी शुभ दिन मंगल आज, सुर ताल की महिमा गावो||

स्थायी

सां सां ध ध	म म ग ग	म म रे ग	रे - सा -
स ब गु णी	ज न मि ल	गा ऽ वो ब	जा ऽ वो ऽ
०	३	×	२
सा रे ग ग	रे ग म -	म ध ध ध	म सांध सां रें
अ प ने ऽ	म न को ऽ	आ ऽ प रि	झा ऽऽ वो ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म म ध ध	सां सां सां सां	सां - सां सां	ध रें - सां
शु भ घ ड़ी	शु भ दि न	मं ऽ ग ल	आ ऽ ऽ ज
०	३	×	२
सां सां - सांरें	गं रें सां -	सां सां ध -	म सांध सां रें [१५०]
सु र ऽ ताऽ	ऽ ल की ऽ	म हि मा ऽ	गा ऽऽ वो ऽ
०	३	×	२

राग : देवांगिनी - तराना (द्रुत त्रिताल)

स्थायी

म ध
दिर दिर

सां ध ध रे	ग रे रे रे	ग - म -	ध - - -
ता नो म् त	ना दे रे ना	दि ऽ म् दि	ऽ म् ऽ ऽ
०	३	×	२
सा रे ग म	ग रे सा -	म म ध म	ध - सा रे
उ द त न	दे रे ना ऽ	त न दे रे	ना ऽ उ द
०	३	×	२
ग म ग रे	सा म म ध	म ध - रें	सां सां म ध
त न दे रे	ना त न दे	रे ना ऽ त	दा नि दिर् दिर्
०	३	×	२

अंतरा

म ध सां सां	सां - सां -	रें सां सां मं	रें गं रें सां
य ल ली ऽम्	लीं ऽ म् ऽ	लीं ऽ म् त	दा रे दा नी
०	३	×	२
सां सां सां ध	ध ध रें रें	रें सां सां सां	ध ध म म
०	३	×	२
रे ग रे सा	रे ग म -	, , म ग	रे सा रेंग म
रे ग रे सा	त दा नी ऽ	, , म ग	रे सा त दा
०	३	×	२
ध - , ,	सां सां ध म	ध सां रें सां	- - म ध १५१
नी ऽ , ,	सां सां ध म	ध सां रें सां	ऽ ऽ दिर् दिर्
०	३	×	२

२.१०.४ राग : देवनन्द / देवनंदिनी

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : पंचम तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : कोमल ऋषभ तथा तीव्र माध्यम बाकी सब शुद्ध

वादी : ग

संवादी : ध

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा रे॒ ग- रे॒ ग- मं॑ ग- मं॑ ध मं॑ - सां

अवरोह : सां ध मं॑ ग॒ रे॒ सा ध़ - मं़॑ ध़ सा

पकड़ : ध़ - सा रे॒ - ग रे॒ स - रे॒ सा - ध़ - सा

विशेषता : यह एक नया राग है | इस राग में मारवा तथा हिंडोल की छाया बार-बार दिखाई देती है | मारवा तथा हिंडोल इन दो रागों के अंग एक के बाद एक बारी-बारी से लेकर इस राग की प्रस्तुति का ध्यान रखा जाता है | इस राग की रचना में - येरी बसंत ऋतू (एकताल विलंबित) तथा आये मोरे मंदरवा (त्रिताल मध्यलय) है |[१५२]

२.१०.५ राग : मधुरंजनी (औडव पटदीप)

थाट : गौरी मेल

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा धैवत

जाति : औडव-औडव

स्वर : गंधार कोमल तथा बाकी सब स्वर शुद्ध

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : सायंकाल से पहले

आरोह : सा, गमपनि,सां

अवरोह : सां, निप, गमप, गमग सऩि - ऩिसा

पकड़ : नि सां नि-प, गमप, गमग सऩि-

विशेषता : 'गमग-सा' इस स्वर संगति से 'मालकौंस' का आभास होता है। परन्तु इस राग में धैवत का वर्ज्य होना तथा पंचम का रहना एवं शुद्ध निषाद पर बारं-बार न्यास करना इन सब बातों से मालकौंस दूर हो जाता है। इस राग में 'पटदीप' का भी आभास होता है। परन्तु इस राग के अवरोह में धैवत तथा ऋषभ न होने से 'पटदीप' से भी दूर हो जाता है। इस राग में मन्द्र निषाद पर न्यास अति मधुर लगता है।[१५३] कही कही पर ऋषभ युक्त मधुरंजनी भी सुनाई देता है | मधुसूदन पटवर्धन जी ने इसे औडवपटदीप भी कहा है | यह एक मधुर राग है |[१५४] इस राग में कई रागों की छाया दिखाई देती है; जैसे - 'सा ग म प नि - सां' से पटदीप, 'म प नि सां' से तिलंग, 'ग म प ग म ग सा से' धानी, 'ग म ग सा ऩि' से चंद्रकौंस इत्यादि |[१५५]

स्वर विस्तार: सा- ऩि -, ऩिसा, पऩि--, पऩि - - सा। पऩिसाग, मगसा, मगमगसा ऩि, पऩि - पऩि सा। ऩिसागगसा ऩि, पऩिसाग, सगम, गम, गमपगम, गमपगमग, मग, मगसा। सागमप, गमपनि, गमपनिप- गम, मनिप,

ग॒म, निपम, पम ग॒मग॒ सा। ग॒मपनि-, पनि-,सां, निसां, निसां ग॒ं सां, पनीसां ग॒ं सां, निसांग॒ंसां ग॒ंसांसांनि, पनि-प, मप, ग॒मग॒-सा।[१५६]

राग : मधुरंजनी - ताल मीनाक्षी

स्थायी : सुनरी सुन सखी मधुरंजनी। रागिनी सरल 'पसा' संवादिनी।
अंतरा : 'रेध' वर्ज्य कर सायंगेय गाय। रुचिर सुर संगत सांनिप ग॒मग॒सानि़।।

स्थायी

प प प	ग॒ म	ग॒ सा नि़	सा ग॒ म	ग॒ म	ग॒ सा सा
सु न री	सु न	स ऽ खी	म धु ऽ	रं ऽ	ज नी ऽ
×	२	०	×	२	०
स ग॒ म	प नि	नि सां सां	सां नि प	ग॒ म	ग॒ सा नि़
रा ऽ गि	नी ऽ	स र ल	प सा सं	वा ऽ	दि नी ऽ
×	२	०	×	२	०

अंतरा

ग॒ म प	नि नि	नि सां सां	नि सां सां	ग॒ं सां	सां नि प
रे ऽ ध	व ऽ	र्ज्य क र	सा ऽ यं	गे य	गा ऽ य
×	२	०	×	२	०
ग॒ं मं पं	ग॒ं मं	ग॒ं सां सां	सां नि प	ग॒ म	ग॒ सा नि़
रु चि र	सु र	सं ग त	सां नि प	ग॒ म	ग॒ सा नि़
×	२	०	×	२	०

ताल - मीनाक्षी

धीं त्रक धीं	धागे त्रक	तीं तागे त्रक [१५७]
×	२	०

राग : मधुरंजनी - झपताल (ऋषभ युक्त दूसरा प्रकार)

स्थायी : एरी सखी आज मोहे श्याम सो मिलाय दे, गोपियन संग रंग रास को रचावे।

अंतरा : चन्द्र बदन मंद हसत, चमके कृति सुन्दर, अधर धर बंशी रूप नित राधे सुहावे।|

स्थायी

म	म-पम	पमग़म	पनीसां-	निप	प	प	प	ग़म	म
ए	ऽऽरीऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	सखि	आ	ज	मो	ऽऽ	हे
०		३			×		२		

पमग़म	पनिसांनि	नि	प	प	निप	-प	म	-	-
श्याऽऽऽ	ऽऽऽऽ	म	ऽ	सो	मिला	ऽय	दे	ऽ	ऽ
०		३			×		२		

म	ग़	रे	-	सा	ऩि	-	सा	प	-प
गो	पि	य	ऽ	न	सं	ऽ	ग	रं	ऽग
०		३			×		२		

निपनिप	ग़मपनिसां	नि	प	प	निप	-	प	ग़म	म
राऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	स	ऽ	को	रचा	ऽ	ऽ	ऽऽ	वे
०		३			×		२		

अंतरा

म म	पनि - नि	सां -	सां निसां -सां
च न्द्र	बद ऽ न	मं ऽ	द हस ऽत
०	३	×	२

नि सां	सांनिनि पनिसांगंमं गंरें	सां -	नि प प
च म	केऽऽ ऽऽऽऽऽ कृति	सु ऽ	न्द ऽ र
०	३	×	२

प प	प प प	म -पमम	गमपनिसां - निप
अ ध	र ध र	बं ऽशीऽऽ	ऽऽऽऽऽ ऽ रूप
०	३	×	२

प सां	नि प प	नि प	प गम म [१५८]
नि त	रा ऽ धे	सु हा	ऽ ऽऽ वे
०	३	×	२

२.१०.६ राग : मधुरा (दुर्गेश्वरीकंस)

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : गंधार शुद्ध तथा धैवत, निषाद कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्री

आरोह : सा ग म, ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म, ग म ग सा

पकड़ : सा ग म ध नि ध म ग, म ग - सा

विशेषता : यह एक यावनिक मधुर राग है | यह राग अलग-अलग नामों से गाया हुआ देखने को मिलता है | इस राग के उत्तरांग में मालकौंस का आभास होता है | इस राग में गंधार का बहुत्व होने के कारण राग मालकौंस से भिन्न दिखाई देता है |[१५९] इस राग के विषय में ऐसा भी कह सकते हैं कि; मालकंस में शुद्ध गंधार करने से, चारुकेशी में रिषभ पंचम वर्जित करने से, खमाज ठाठ के दुर्गा में कोमल धैवत करने से इस राग के स्वर सामने आते है |

स्वर विस्तार: सा, नि़सा, नि़ ध़ म़, म़ ध़ नि़ सा, ग म ग - सा। सा ग म, ग सा नि़, सा ग , ग नि़, नि़ सा ग , म ग सा, नि़साग नि़ग मग - सा। नि़साग ग सनि़धनि़साग म, म़नि़म, सग म, ग मध ग ग म, ग मग

-सा। निसाग ग सनिसाग मधनि ध, म ध नि ध, ग मध, ग मनिग मध, मधनिध, ग म, ग मधनि, निध, निग मधनि, ग मधनि, मधनीधम, ग मग सा। ग ग मध मधनिध मधनिसां, सां नि सां, निसां गं सां, सां गं मं गं सां, गं गं सां निसां- नि ध - म ग म, ग म ग सा।[१६०]

राग : मधुरा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : अब न जगाओ कृष्ण मुरारी भई भोर मोहे सोवन देरे |
अंतरा : अँखियन मोरी लागी पलछिन, अब न सतावो नंद दुलारे।।

स्थायी

			नि
			अ
सां नि ध ग	म - म -	- ग ग म	ग - सा नि
ब न ऽ ज	गा ऽ ओ ऽ	ऽ कृ ष्ण मु	रा ऽ री भ
३	×	२	
ध नि सा ग	म - म -	- ग म ध	नि - ध नि
ई भो ऽ र	मो ऽ हे ऽ	ऽ सो व न	दे ऽ रे अ
३	×	२	०

अंतरा

			ग
			अँ
म ध - नि	सां - सां नि	- सां - नि	सां सां सां सां
खि य ऽ न	मो ऽ री ऽ	ऽ ला ऽ गी	प ल छि न
०	३	×	२
नि नि सां सां	^निध - म (म)	ग ग ग म	ग - सा नि[१६१]
अ ब न स	ता ऽ वो ऽ	नं ऽ द दु	ला ऽ रे अ
०	३	×	२

राग : मधुरा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

, , सां सां	सांनि॒ ध॒नि॒ ध॒नि॒ सांगं	सां ध॒ नि॒ ध॒	ध॒मम - ग -
ऽ ऽ तु ही	प्याऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	रा श्या ऽ म	मोऽ ऽ रा ऽ
२	०	३	×
सा ग म म	ग - सा म	सा म ग ध॒	- म ध॒ म
द र स दि	खा ऽ वो क	रो मो से प्या	ऽ री ब ती
२	०	३	×
मध॒ नि॒सां सां सां			
याऽ ऽऽ तु ही			
२			

अंतरा

म ग मध॒ नि॒सां	सां - सां -	नि॒ नि॒ सां गं	नि॒ ध॒नि॒ नि॒ध॒ ध॒म
दु ऽ खेऽ ऽऽ	नै ऽ ना ऽ	बा ऽ ऽ ट	ट कत के ऽ
०	३	×	२
ध॒ग म मनि॒ ध॒नि॒	- ध॒ - म	ध॒म ग - ग	सा ग म म
तु म नाऽ ऽऽ	ऽ आ ऽ ये	प्याऽ ऽ ऽ रे	द र स दि
०	३	×	२
ग - सा म	सा म ग ध॒	- म ध॒ म	मध॒ नि॒सां सां सां१६२
खा ऽ वो क	रो मो से प्या	ऽ री ब ती	याऽ ऽऽ तु ही
०	३	×	२

२.१०.७ राग : राजेश्वरी / चन्द्रध्वनि

थाट : गौरीमनोहारी २३ मेलकर्ता

वर्ज्य स्वर : ऋषभ तथा पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : गंधार कोमल तथा बाकी सब स्वर शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्री

आरोह : सा ग म ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म ग सा

पकड़ : म ध नि ध म ग, म ग - सा

विशेषता : राजेश्वरी राग कई नामों से पहचाना जाता है जैसे 'भिन्नकौंस, चन्द्रध्वनि, इत्यादि । 'सागमग-सा' इस स्वर संगति से 'मालकौंस' का आभास होता है। परन्तु इस राग में शुद्ध धैवत तथा शुद्ध निषाद के चलते मालकौंस की छाया लुप्त होती है। उत्तरांग में 'मधनी सां नीधम' यह स्वरावली 'भिन्नषड्ज़' राग की है। अर्थात पूर्वांग में मालकौंस तथा उत्तरांग में भिन्नषड्ज़ इन दोनों का सहमिश्रण इस राग में दिखाई देता है। इस राग में शुद्ध धैवत तथा निषाद स्वर एक महत्वपूर्ण विश्रांति स्थान है। इस राग में भी मन्द्र निषाद पर ठहरा जाता है। इस राग में धैवत तथा गंधार की स्वर संगति भी ली जाति है जो रंजक है।[१६३] राग भिन्नषड्ज में शुद्ध गंधार के स्थान पर कोमल गंधार का प्रयोग करने से यह राग सामने आता है |[१६४] चन्द्रध्वनि नाम से तात्पर्य यह भी है की पूर्वांग में चंद्रकौंस तथा उत्तरांग में कौशिकध्वनि (भिन्नषड्ज), जैसे - ऩि सा ग सा, म ग सा ऩि सा(चंद्रकौंस); म ध, नि ध म, म ध नि सां (भिन्नषड्ज) |[१६५]

स्वर विस्तार: सा, ऩिसा, ऩि ध़ म़, म़ ध़ ऩि सा, ग म ग - सा। सा ग म, ग सा ऩि, सा ग, ग ऩि, ऩि सा ग, म ग सा, ऩिसाग ऩिग मग - सा। ऩिसागगसऩिधऩिसागम, म़ऩिम, सगम, गमध गगम, गमग-सा। ऩिसागगसऩिसागमधनि ध, म ध नि ध, गमध, गमनिगमध, मधनिध, गम, गमधनि, निध, निगमधनि, गमधनि, मधनीधम, गमग सा। गगमध मधनिध मधनिसां, सां नि सां, निसां गं सां, सां गं मं गं सां, गंगंसां निसां-नि ध - म ग म, ग म ग सा।[१६६]

राग : राजेश्वरी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : आली री मनावन आयो, बनरा ब्याहन को आयो।

अंतरा : रस की रसीली अखियाँ तोरी। इनायत बिनती करत तोसे हारी हारी।।

स्थायी

			मग॒
			आ
म धनि सां नि	नि - ध -	ग॒ साम ग॒ म	ग॒ - सा -
ली रीऽ ऽ म	ना ऽ ऽ ऽ	व नऽ ऽ ऽ	आ ऽ यो ऽ
३	×	२	०
स ग॒ ध़ ऩि	साम ग॒ म म	धम ग॒म धनि सां-	नि ध ग॒म मग॒
ब न रा ऽ	ब्याऽ ऽ ह न	कोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	आ ऽ योऽ आ
३	×	२	०

अंतरा

ग॒ म ध नि	सां - सां -	ध नि सांग॒ं मं	ग॒ं नि सां ध
र स की र	सी ऽ ली ऽ	अ खि याँऽ ऽ	ऽ तो ऽ री
०	३	×	२
ग॒ ग॒ म ग॒	- सा ग॒ म	ध नि सां सां	ग॒ं सां नि सां
इ ना ऽ य	ऽ त बि न	ती क र त	तो से हा ऽ
०	३	×	२
नि ध म मग॒	१६७		
री हा री आ			
०			

२.१०.८ राग : कौशी जोग

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : आरोह-अवरोह में रिषभ तथा आरोह में पंचम एवं अवरोह में धैवत

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत तथा निषाद स्वर कोमल एवं दोनों गंधार

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : मध्यरात्री

आरोह : सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां

अवरोह : सां नि॒ प, म ग म ग॒ सा

पकड़ : ग॒ म ध॒ नि॒ प, म ग म ग॒ सा

विशेषता : इस राग की रचना (संकल्पना) पं. श्रीकृष्ण (बबनराव) हळदनकर जी ने की है | यह राग मालकौंस तथा जोग के मिश्रण से बना है | इसके समीप का राग जोगकौंस है | परन्तु प्रचलित जोगकौंस में चंद्रकौंस का मिश्रण होने के कारण दोनों राग एक दुसरे से भिन्न दिखाई देते है | इस मिश्र राग में जोग का स्वरुप प्रचलित जोगकौंस की अपेक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है | सानि॒ साग॒ मध॒ - मग॒ सा, नि॒ ग॒ - सा नि॒ - प़; आगे चलकर जोग तथा मालकौंस मिल-जुलकर चलते है; जोग को मालकौंस से जोड़ने के लिए ‘ग-म-ग॒’ तथा मालकौंस को जोग से जोड़ने के लिए ‘ग॒ सा नि॒-प’ इन टुकड़ो का प्रयोग होता है|

स्वर विस्तार : सा नि॒ सा ग॒ म ध॒ म ग॒ सा नि॒ ग॒ सा नि॒ प़, प़ ध॒ नि॒ सा ग॒ सा, सा ग, ग ग म, ^नि^प ^नि^प म ग म ग॒ --, ग॒ म ध॒ नि॒ सां - - ध॒ नि॒ सां -- -गं॒ सां- नि॒ प -, नि॒म प गम ग॒ सा ।[१६८]

राग : कौशी जोग- बड़ा ख्याल - (तिलवाडा)

स्थायी: सांवरे से लागे नैन। मोरी माई| उनके दरस बिन कैसे कटे दिन रैन|

अंतरा: याद आवत रंगरलियाँ की| सुध-बुध सब जात रही| मिलन की आस| तरसे रस नैन|

स्थायी

--ग॒ग॒	सानि॒	साग॒	मध॒	-म ग॒	सानि॒ -ग॒ सा	|	नि॒ प़	प़नि॒सा	- - सा ग॒		
--सांऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽव रे	सेऽ ऽला गे	|	नै न	मोरीऽ	ऽऽ मा ऽ		
३							×				

--सा-	नि॒साग॒ग॒	म-म-	नि॒पपममगग	|	म मग॒ - -	मध॒नि॒	नि॒सां - नि॒गं॒सां	
ऽऽईऽ	उ नकेद	रऽसऽ	बिऽऽऽऽऽऽ	|	ऽ नऽ ऽऽ	कैसेक	टेऽ ऽ ऽदिन	
२					०			

नि॒प-म-	|	ग-म-	साग॒-सा	ग॒ग॒
रैऽऽऽऽ	|	ऽऽऽऽ	ऽऽऽन	साऽ
		३		

अंतरा

,ग॒ग॒म	ध॒ध॒मग॒	,मध॒नि॒सां-	- - नि॒गं॒	सां	---ध॒नि॒	सां मंगं मं गं॒सां	
यादआ	वतऽऽ	,रंगरलि-	ऽऽऽ याँ	की	ऽऽऽसुध	बु धऽ ऽ सब	
३				×			

सां	-	निं॒गं॒	सां	नि॒ --प	- - -प	सां - नि॒प	म - ^म^गम
जा	ऽ	ऽत	र	ही ऽऽऽ	ऽऽऽमि	ल ऽ नकी	आ ऽ ऽऽ
				२			

ग॒ - - मध॒	नि॒सां - - गं॒सां	नि॒प - म -	ग-म-
स ऽऽ तर	सेऽ ऽऽ रस	नै ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ
०			

सा ग॒ - ग॒	नि॒ - सा ग॒सा	सग॒मध॒ ग॒मध॒-	मग॒ सा नि॒ ग॒सा	नि॒
ऽ ऽ ऽ न	ऽ ऽ ऽ साऽ	ऽऽऽऽऽऽऽऽ	वरे से ऽ लागे	नै
३				

२.१०.९ राग : रसचंद्र

थाट : बिलावल तथा ललित का मिश्रित स्वरुप

वर्ज्य स्वर : पंचम तथा निषाद स्वर वर्ज्य है

जाति : औडव-औडव

स्वर : दोनों मध्यम स्वर तथा बाकी सब शुद्ध स्वर

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा रे सा, गमरे-सा, गम-मंम, धमंम, मंधमंसां

अवरोह : सां ध-मं म, ग-ममंधमंम, गमरे-सा

पकड़ : मंधमंसां-धमंम, ग- मंम, धमंम, गमरे -सा

विशेषता : यह एक मींड प्रधान आधुनिक प्रकार है। इस राग में एक के बाद एक दोनों मध्यम ललितांग से लगाए जाते हैं। तथा आरोह में रिषभ दुर्बल रहता है। यह एक नवीन (नया) प्रकार है। इस राग के पूर्वांग में सा रे सा, सारेग, सा रे सा ग, म ग, मगमरे-सा, मरे, सा; इत्यादि स्वर समूह तथा अवरोह में वक्र गंधार युक्त 'गमरे-सा' यह सब बिलावल को प्रकाशित करते हैं। मंधमंसां-धमं-म; ग-मंमधमंम-; यह स्वर-समूह को इस राग में बार-बार दिखाने से राग स्पष्ट होता है | इस राग में मध्यम स्वर तो प्रमुख है ही परन्तु इसके अतिरिक्त गंधार भी एक महत्त्वपूर्ण विश्रांति स्थान है | इस राग की रचना में - बलि बलि जाऊ (एकताल विलम्बित) तथा बलमवा जागो हरि (त्रिताल) है |

स्वर विस्तार: सा ध़ म़ सा, ध़ सा रे सा, गमरे- सा, सा रे सा ग-, ग-म-,गमम॑म ग, म॑म ग, मरे- सा ।सा रेसा ग- म-,गमम॑ध-म॑म, गधध म॑म, म॑म ग, मम॑-म ग,मरे-सा; ग-मम॑धम॑म-- । म॑ध म॑सां, म॑ध सां, ग म॑ ध म॑ सां, ग म ध म॑ ध सां, ध सां रें सां, गं मं रें- सां, सां ध सां ध - म॑ म, ग, ध म॑ म ग, मगमरे-सा; ग-मम॑धम॑म–|[170]

राग - रसचंद्र - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : बालमुवा जागो हरि | शुभ प्रात की मंगल आई घड़ी |
अंतरा : कीर मुरवा कोकिल कुहू बोले | अरुण चूमत नव नलिनी न्यारी |

स्थायी

ग
बा

- म - ^ध म॑	ध - म॑ -	म - ग म	रे रे सा सा
ऽ ल ऽ मु	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ऽ	गो ह रि शु
ध़ म़॑ ध़ म़॑	सा - ग -	ग ग ग म	रे रे सा ग
भ प्रा ऽ त	की ऽ मं ऽ	ग ल आ ऽ	ई घ ड़ी बा
३	×	२	०

अंतरा

म
की

ग म ध म॑	सां - सां -	रें सां ध सां	ध म॑ म गं
ऽ र मु र	वा ऽ को ऽ	कि ल कु हू	बो ऽ ले अ
मं रें सां -	सां रें सां सां	सां ध म॑ म	गम रे सा ग [171]
रु ण चू ऽ	म त न व	न लि नी ऽ	ऽऽ न्या री बा
३	×	२	०

२.१०.१० राग : चंद्रप्रभा

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : गंधार तथा पंचम

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत स्वर कोमल है

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्री का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे म ध़ु नि सां

अवरोह : सां नि धु म रे सा

पकड़ : सा रे म, रे म धु म रे ऩि सा

विशेषता : राग चन्द्रकौंस में गंधार स्वर को वर्ज्य करके उसकी जगह रिषभ स्वर को रखने से इस राग की रचना होती है ।

स्वर विस्तार : सा, ऩिसा धु म, म धु नि - सा, सा रेसासा ऩिधु, म धु ऩि सा रे सा, सा रे - रे - म -, म रे, ऩि सा रे सा,सा रे म रे म धु - म,म धु नि नि धु, नि सां, धु नि सां रें सां, रें नि सां धु म, रे म धु नि धु म, म धु नि म नि धु म, रे म रे ऩि धु ऩि सा, रे म रे सा, सारे मधु निसां रें - - मरें नि - सां रें धु - - म नि - - धु म रे ऩि - - सा म रे धु - ऩि सा रे म सा, मरेरे मधुनीसां रेमंमंरेंसांनिधु रेंरेंसां - - नि धु - -

नि - - म- ध॒निध॒-म-रेसा ऩिध़॒ऩिसा रेमसा, साऩिध़॒ऩि सारेमध॒निसांनिध॒मरे सा।[१७२]

राग : चंद्रप्रभा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : जा जारे-जारे कगवा उनके देश, ना जानू पतियाँ मोरे साजन की|
अन्तरा : कब घर आवे मोरे प्यारे, गिन-गिन तारे बीती रतियाँ ॥

स्थायी

				रे
				जा
म ध॒ नि सां	सांनि म सां -	नि ध॒ म रे	रेसा ध॒ - रे	
ऽ जा ऽ रे	जाऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ रे क ग	वाऽ ऽ ऽ उ	
ध़॒ ऩि सा -	सा रे - सा	- स रे रे	सा - - -	
न के दे ऽ	श न ऽ जा	ऽ नू प ति	याँ ऽ ऽ ऽ	
म ध॒ नि सां	सांनि ध॒म ध॒नि सांरें	सांनि ध॒म मध॒ मरे	रेम रेसा ऩिसा रे	
मो ऽ रे ऽ	साऽ ऽऽ जऽ नऽ	कीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ जा	
३	x	२	०	रे

अंतरा

				क
म ध॒ - नि	सां - सां -	नि सां रें मं	रें रें सां रें	
ब घ ऽ र	आ ऽ वे ऽ	मो ऽ रे ऽ	प्या ऽ रे गि	
मं रें रें सां	नि ध॒ - म	सांनि ध॒म ध॒नि सांरें	सांनि ध॒म रे- रे [१७३]	
न गि ऽ न	ता ऽ ऽ रे	बीऽ ऽऽ तेऽ ऽऽ	रऽ तिऽ याँऽ जा	
३	x	२	०	

२.१०.११ राग : प्रतीक्षा / भूपेश्वरी / भूपकली

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : मध्यम तथा निषाद

जाति : औडव-औडव

स्वर : धैवत स्वर कोमल है

वादी : ग

संवादी : ध॒

गायन समय : रात्री का प्रथम प्रहर

आरोह : सा रे ग प ध॒ सां

अवरोह : सां ध॒ प ग रे सा

पकड़ : सा रे ग प, ध॒ ध॒ प - ग रे - सा

विशेषता : यह एक आधुनिक राग है | इस राग की रचना भूपाली राग के स्वरों में शुद्ध धैवत की जगह कोमल धैवत स्वर को लेकर की गई है | **स्वरुप** : सा रे ग, ग, प, ध॒ प, ध॒ सां, रें सां, ध॒ प, ग प ध॒ प, ग प ग रे, सा ध॒ सा |[१७४]

राग : प्रतीक्षा / भूपेश्वरी / भूपकली

स्थायी : सैंयाँ नाही आये आज मोरी आली, तड़प-तड़प मोरी रैना बीती जाए|

अंतरा : कासे कहूँ अब दुःख की बतियाँ, 'ध्यानरंग' पिया नाही आये ||

स्थायी

															रे
															सैं
सा	प़	ध़॒	प़	सा	-	सा	सा	-	रे	ग	प	(ग)रे	-	सा	सा
याँ	ना	ऽ	ही	आ	ऽ	ये	आ	ऽ	ज	मो	री	आ	ऽ	ली	त
रे	ग	(प)ध॒	ध॒	प	प	प	प	ग	रे	ग	प	(ग)रे	-	सा	सा
ड़	प	ऽ	त	ड़	प	मो	री	रै	ना	बी	ती	जा	ऽ	ए	सै
३				×				२				०			

अंतरा

				ग	प	ध॒	ध॒	सां	-	सां	सां	सां	रें	गं	रें
				का	ऽ	से	क	हूँ	ऽ	अ	ब	दुः	ख	की	ऽ
(सां)ध॒	ध॒	प	-	ग	ग	ग	ग	ग	प	ध॒	प	(ग)रे	-	सा	सा
ब	ति	याँ	ऽ	'ध्या	न	रं	ग'	पि	या	ना	ही	आ	ऽ	ये	सै[१७५]
३				×				२				०			

संदर्भ - द्वितीय अध्याय

१. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २३ से २४ |

२. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.४८ |

३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २४ |

४. रचनाकार: पं. शिवकुमार शुक्ल (भेंडीबझार घराना) के शिष्य अनिल वैष्णव सर से प्राप्त |

५. रचनाकार: उ. अमान अली खाँन साहब (भेंडीबझार घराना)

६. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.४३ |

७. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 24.

८. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ.२१ से २२ |

९. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.४३ |

१०. राग - रसरंजनी : https://youtu.be/fZ7IViRKGXU
रचनाकार - उस्ताद हाफ़िज एहमद खाँन (रामपुर सहसवान घराना) |

११. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९६ |

१२. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 53-54.

१३. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९३ |

१४. राग - सालंग सारंग : https://youtu.be/WxfMrTd4pX0
गायक : पं. प्रभाकर कारेकर |

१५. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १८६ से १८७|

१६. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 121.

१७. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १८८ |

१८. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १८९ |

१९. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९४ |

२०. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. २०४ से २०५|

२१. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. २०६ |

२२. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग.). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३८ |

२३. RAO, B. SUBBA. (1980). RAGANIDHI. (VOLUME ONE). (SECOND IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 139.

२४. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३९ |
२५. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४२ |
२६. झा, रामाश्रय. (१९९१). अभिनव गीतांजलि. (भाग दो). (तृतीय संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १३७ से १३९ |
२७. पटवर्धन, वि. (१९८४). राग विज्ञान. (पंचम भाग). (षष्टम आवृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.७४ |
२८. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.१२३ |
२९. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२०१ **|**
३०. पटवर्धन, वि. (१९८४). राग विज्ञान. (पंचम भाग). (षष्टम आवृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.७७ से ७८ |
३१. राग - जलधरकेदार : https://youtu.be/ovP2jobtPv4
स्वर : पं. रामचंन्द्र पुरुषोत्तम मराठे राग रसिक |
३२. पटवर्धन, वि. (१९८४). राग विज्ञान. (पंचम भाग). (षष्टम आवृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.७६ |
३३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ९ से १० |
३४. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. १ |

३५. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १० |
३६. राग - श्रीकल्याण : गायक : अशोक हुगन्नवर (इन्टरनेट) https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/ShreeKalyanTypeII_AshokHuggannavar.mp3
३७. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १६ से १७ |
३८. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. ३७|
३९. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 215 to 216.
४०. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १७ |
४१. राग - वैजयंती : गायक : विदुषी अलका दास | https://youtu.be/qSv600kpAx0
४२. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४८३ |
४३. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५ |
४४. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६ |
४५. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ८ से ९ |
४६. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १४ से १६ |

४७. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४८९ |

४८. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. ५० |

४९. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४९० से ४९१ |

५०. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १७ से १८ |

५१. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ४ |

५२. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ६ |

५३. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४६ से ४८ |

५४. पत्की, ज. दे. (१९५९, अगस्त). अप्रकाशित राग. (दूसरा भाग). (द्वितीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४९ से ५० |

५५. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. २२ |

५६. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२६२ से २६३ |

५७. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५८३ |

५८. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५८४ |

५९. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. २४ |

६०. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४९ |

६१. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.१६५ |

६२. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५९८ |

६३. खाँ, अमान अली. (अमर). (२०१७). अमर बंदिशे. संपादक - कोराटकर सुहासिनी. प्रकाशक - प्रशाद कुलकर्णी, मुंबई. पृ. १३३ |

६४. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.१६६ |

६५. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि. (भाग चार). (प्रथम संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. ६२ |

६६. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २७८ |

६७. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.४ |

६८. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २७८ |

६९. रचनाकार : उ. अमान अली खाँ. (भेंडीबझार घराना), प्रो. द्वारकानाथ भोंसले सर से प्राप्त |

७०. रचनाकार : उ. अमान अली खाँ. (भेंडीबझार घराना), श्री अनिल वैष्णव सर से प्राप्त |

७१. रातंजनकर, एस. एन. (१९९०). अभिनवगीतमंजरी. (प्रथम भाग). (तृतीय संस्करण.). प्रकाशक - आचार्य एस.एन. रातंजनकर फाऊण्डेसन, बम्बई. पृ.२४२ |

७२. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २९७ |

७३. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.१६९ |

७४. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३०० |

७५. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १९० |

७६. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३५९ से ३६० **|**

७७. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. १ |

७८. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग).

पृ. ४० |

७९. राग - झीलफ, गायक : पं. जितेन्द्र अभिशेकी
https://youtu.be/HfNYr-xY6Gk

८०. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १७७ से १७८ |

८१. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३४३ **|**

८२. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि. (भाग चार). (प्रथम संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १०९ |

८३. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ३३ |

८४. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १७८ |

८५. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ३५ से ३६ |

८६. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १८३ |

८७. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. १ |

८८. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३१३ |

८९. काशीकर, शं. वि. (२०२०). श्रुति विलास. (छठवाँ संस्करण.). प्रकाशक – प्रसाद कुलकर्णी, संस्कार प्रकाशान, मुंबई. पृ.१२९ |

९०. पं. मणिप्रसाद जी (किराना) से प्राप्त, रचनाकार - मणिप्रसाद जी |

९१. पं. मणिप्रसाद जी (किराना) से प्राप्त, रचनाकार - मणिप्रसाद जी |

९२. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २७३ से २७४ |

९३. स्व रचित

९४. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. २५ |

९५. RAO, B. SUBBA. (1964). RAGANIDHI. (VOLUME TWO). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 81 to 82 |

९६. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. २५ |

९७. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. २७ |

९८. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३३० **|**

९९. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि. (भाग चार). (प्रथम संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १०४ से १०५ |

१००. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १३१ से १३२ |

१०१. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३३० से ३३१ |

१०२. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५२ |

१०३. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक-पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ५३ |

१०४. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २४७ |

१०५. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी ग्यारहवाँ संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३९८ |

१०६. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६३९ से ६४० |

१०७. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५२ से ५३ |

१०८. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. ५४|

१०९. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७५ से ७६ |

११०. RAO, B. SUBBA. (1964). RAGANIDHI. (VOLUME TWO). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 34.

१११. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. १ से २ |

११२. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७५ से ७६ |

११३. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७६ से ७७ |

११४. पटवर्धन, वि. (१९६८, दिसम्बर). राग विज्ञान. (चतुर्थ भाग). (पंचम आवृत्ती.). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ .७८ |

११५. भातखंडे, वि. (१९९९, दिसम्बर). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (छठी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण. प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ५९ **|**

११६. भट्ट, बलवंतराय गुलाबराय. (मई १९७४). भावरंग-लहरी. (द्वितीय भाग). पृ. २३३ |

११७. पटवर्धन, वि. (१९६८, दिसम्बर). राग विज्ञान. (चतुर्थ भाग). (पंचम आवृत्ती). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ .७९ |

११८. श्री लक्ष्मीकांत बापट सर (किराना घराना) से प्राप्त |

११९. श्री लक्ष्मीकांत बापट सर (किराना घराना) से प्राप्त |

१२०. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ४३ |

१२१. टेंकशे, श. अ. (शके १८९५). नव-राग-निर्मिती. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ, मुंबई. पृ. २३० |

१२२. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ४५ |

१२३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४४ से ४६ |

१२४. टेंकशे, श. अ. (शके १८९५). नव-राग-निर्मिती. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ, मुंबई. पृ. १९२ |

१२५. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ४७ |

१२६. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. १०५ से १०६|

१२७. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 50 to 51.

१२८. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ५२ |

१२९. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ५४ |

१३०. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ९७ से ९८ |

१३१. पटवर्धन, वि. (१९९०), राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. २२|

१३२. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ९८ |
१३३. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ९९ |
१३४. पटवर्धन, वि. (१९९०). राग विज्ञान. (सप्तम भाग). (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन विनायक नारायण. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ. २४|
१३५. राग - सुहानी तोड़ी https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/SuhaaniTodi_GhulamHaiderKhan.mp3
१३६. राग - सुहानी तोड़ी : https://youtu.be/uN3W30tlZ2g गायक : उ. गुलाम हैदर खाँ (कव्वाल बच्चो का घराना) |
१३७. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ८१८ |
१३८. टेंकशे, श. अ. (शके १८९५). नव-राग-निर्मिती. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ, मुंबई. पृ. १४४ से १४५ |
१३९. राग - छाया तोड़ी https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/ChhayaTodi_VijayBakshi.mp3
१४०. झा, रामाश्रय. (१९९५). अभिनव गीतांजलि. (भाग चार). (प्रथम संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १२३ |
१४१. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७९२ |
१४२. टेंकशे, श. अ. (शके १८९५). नव-राग-निर्मिती. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ, मुंबई. पृ. १४७ |
१४३. राग - भूपाल तोड़ी https://youtu.be/OR-5LMNn59s

१४४. राग - अमीरखानी कौंस https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/AmirkhaniKouns_AmirKhan.mp3
१४५. राग - अमीरखानी कौंस https://youtu.be/hvGF3zdKcPs
१४६. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. १५|
१४७. राग - अमृतवर्षिणी : https://youtu.be/sQZZIyBzZTU
१४८. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. २७|
१४९. टेंकशे, श. अ. (शके १८९५). नव-राग-निर्मिती. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ, मुंबई. पृ. १९२ |
१५०. राग - देवांगिनी : https://youtu.be/1vU7h3-viCU रचनाकार- पं. यशवंत देव, गायक: प्रसाद सावकार
१५१. राग - देवांगिनी : https://youtu.be/1vU7h3-viCU
१५२. RAO, B. SUBBA. (1964). RAGANIDHI. (VOLUME TWO). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 24 |
१५३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६५ से ६६ |
१५४. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. ९ |
१५५. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 97 to 98.
१५६. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६६ |
१५७. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६९ |

१५८. राग - मधुरंजनी : https://youtu.be/2o9Sw1blf7Q गायक : पं. विजय कोपरकर |

१५९. राग - मधुरा https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/Madhura_VijayBakshi.mp3

१६०. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. ३ |

१६१. गायक : निशा पारखी, आकाशवाणी (AIR)

१६२. राग - मधुरा https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/Madhura_VijayBakshi.mp3

१६३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७० |

१६४. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. २५|

१६५. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 8 To 9.

१६६. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ७० से ७१ |

१६७. राग - राजेश्वरी https://youtu.be/kM5l5CrvTAw रचनाकार : उ. इनायत हुसैन खाँ, गायक : उ. राशिद खान |

१६८. हळदनकर, श्री. ब. (२००१, सप्टेम्बर). 'रसपिया' बंदिश. रागश्री संगीत प्रतिष्ठान, मुलुंड, मुंबई. पृ. १०९ से ११० |

१६९. हळदनकर, श्री. ब. (२००१, सप्टेम्बर). 'रसपिया' बंदिश. रागश्री संगीत प्रतिष्ठान, मुलुंड, मुंबई. पृ. १०७ |

१७०. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २२ से २३ |

१७१. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २४ से २५ |

१७२. पटवर्धन, म. वि. (१९९८). राग विज्ञान. (अष्टम भाग). (प्रथमावृत्ती.). प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, पुणे. पृ. २१ |

१७३. राग - चंद्रप्रभा : https://youtu.be/ZLznuZvSvik गायक : पं. राशिकलाल अन्धारिया |

१७४. राग - भूपकली https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/Bhoopkali_VijayRaghavRao_Bansuri.mp3

१७५. राग - प्रतीक्षा / भूपेश्वरी : https://youtu.be/VkDMsmw6icY रचनाकार : पं. मणिप्रसाद (किराना घराना) |